Palash Ke Phool

पलाश के फूल

A Story by

Dr. Vinod K. Singh

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Vinod K Singh 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-837-4

Typesetting: Simran Maurya

First Edition: May 2026

समर्पण

उन सभी स्वप्नदर्शी विद्यार्थियों के नाम,
जो प्रेम और कर्तव्य के द्वन्द में भी
मानवता की शपथ को सर्वोपरि रखते हैं।
साथ ही मेरी प्रिय पत्नी डॉ. बंदना, मेरी बेटी डॉ. निधि और मेरे पुत्र प्रणय
को, जिनका प्रेम, सहयोग और प्रेरणा हर कदम पर मेरे साथ रही।

प्रस्तावना

कभी-कभी जीवन की सबसे बड़ी कथाएँ शब्दों से नहीं, प्रतीक्षा से लिखी जाती हैं। कभी प्रेम मिलन में नहीं, बल्कि विरह में अपनी सच्ची परिभाषा पाता है। और कभी असफलता अंत नहीं, आत्मबोध का आरंभ होती है।

"पलाश के फूल" ऐसी ही एक कथा है जहाँ अग्नि केवल जलाती नहीं, आलोक भी देती है।

यह उपन्यास केवल दो व्यक्तियों की प्रेमकथा नहीं है। यह उन भावनाओं की यात्रा है जो युवावस्था की आकांक्षा से प्रारंभ होकर परिपक्व विश्वास तक पहुँचती हैं। यह उस संघर्ष की कहानी है जहाँ प्रतिस्पर्धा, असफलता, महत्वाकांक्षा और कर्तव्य सब मिलकर मानव-मन को परखते हैं। चिकित्सा-जगत की कठोर वास्तविकताओं के बीच उगता हुआ कोमल प्रेम यही इस कथा का केंद्र है।

आरव और मारिया की कहानी केवल आकर्षण की नहीं, संयम की है। यह उस विश्वास की है जो परीक्षा-परिणामों से बड़ा है, और उस त्याग की है जो शब्दों से नहीं, मौन से व्यक्त होता है। नंदिता का चरित्र इस कथा में एक गहरी परत जोड़ता है वह दिखाती है कि प्रेम का सबसे परिपक्व रूप वह है जो स्वामित्व नहीं चाहता, बल्कि दूसरे के सुख में अपनी संतुष्टि खोज लेता है।

पलाश का वृक्ष इस पूरी कथा में एक प्रतीक है। वह पहले पत्ते त्यागता है, फिर अग्नि की तरह दहक उठता है। त्याग के बाद ही सौंदर्य आता है और संघर्ष के बाद ही स्थिरता। इसी प्रकार जीवन भी हमें पहले परखता है, फिर गढ़ता है।

यह कृति चिकित्सा-धर्म के उस पक्ष को भी उजागर करती है जहाँ डॉक्टर केवल रोग का उपचार नहीं करते, वे संवेदना का स्पर्श भी देते हैं। यहाँ कर्तव्य और करुणा साथ चलते हैं। यहाँ पेशा नहीं, साधना है।

यदि इस कथा को पढ़ते हुए आपको अपने जीवन के किसी संघर्ष, किसी मौन, त्याग, या किसी अनकहे प्रेम की स्मृति हो तो समझिए कि “पलाश के फूल” अपना उद्देश्य पा चुका है।

यह कहानी बताती है —
प्रेम दुर्बलता नहीं, यदि उसमें विश्वास हो।
त्याग पराजय नहीं, यदि उसमें गरिमा हो।
और असफलता अंत नहीं, यदि उसमें सीख हो।

अंततः, यह उपन्यास एक ही सत्य को स्पर्श करता है —

जब प्रेम विश्वास पर टिक जाए, तो वह अग्नि नहीं रहता; वह प्रकाश बन जाता है। आपका स्वागत है इस यात्रा में जहाँ पलाश दहकते हैं, और हृदय परिपक्व होते हैं।

डॉ. विनोद के. सिंह

गाँव की संध्या में एक अलग ही सुकून होता है।

मिट्टी की सौंधी गंध, दूर कहीं बैलों की घंटियों की मद्धिम झंकार, गेहूँ की बालियों से होकर आती हवा का मृदुल स्पर्श, और आँगन में उतरती चाँदनी जैसे समय स्वयं अपने चरण थामकर बैठ गया हो।

सेमेस्टर की समाप्ति पर आरव कुछ दिनों के लिए गाँव लौट आया था। महानगर के मेडिकल कॉलेज की कठोर दिनचर्या, एनाटॉमी हॉल की शुष्क ठंडक और पीले प्रकाश में डूबे रात्रिकालीन अध्ययन-कक्ष से अलग, गाँव की हवा में एक सहज शांति थी मानो थका हुआ मन अचानक किसी पुराने, परिचित आँगन में आकर ठहर गया हो। इसी आँगन में उसकी स्मृतियाँ भी धीरे-धीरे जाग उठीं। यही वह स्थान था जहाँ वह और उसकी बड़ी बहन निधि साथ-साथ बड़े हुए थे। निधि उससे कुछ वर्ष बड़ी थी, पर बचपन से ही उसमें एक स्वाभाविक जिम्मेदारी और स्नेह था। वह कभी उसके बस्ते की किताबें ठीक कर देती, कभी देर हो जाने पर उसका हाथ पकड़कर पगडंडी की ओर खींच ले जाती।

निधि भी घर आई हुई थी। उसने एमबीए पूरा कर महानगर की एक प्रतिष्ठित कंपनी में प्रबंधक के रूप में अपना स्थान बना लिया था। उसके व्यक्तित्व में एक आत्मविश्वास था बातों में तीक्ष्णता, निर्णयों में स्पष्टता पर उस कठोरता के भीतर भाई के लिए एक पारदर्शी स्नेह भी छिपा रहता था।

उस शाम दोनों छत पर बैठे थे। हवा में गेहूँ की बालियों की महक घुली थी। तारों से भरे आकाश के नीचे जैसे स्मृतियाँ स्पष्ट हो उठती हैं। निधि ने चुपचाप आरव को देखा।

"जनाब आजकल बहुत खोए-खोए से रहते हैं... कोई कहानी चल रही है क्या?"

आरव चौंका।

"नहीं तो... पढ़ाई का दबाव है बस।"

निधि मुस्कुराई।

“देखो डॉक्टर साहब, कंपनी के बोर्डरूम में सौ लोगों की नीयत पढ़ लेती हूँ। तुम्हारा चेहरा तो बचपन से पढ़ती आई हूँ। साफ़ लिखा है मामला दिल का है।”

आरव ने हल्का-सा मुस्कराकर नज़रें फेर लीं।

“बस... एक दोस्त है कॉलेज में।”

“दोस्त?” निधि ने शब्द को लंबा खींचा, “लड़का या लड़की?”

आरव चुप। निधि खिलखिलाकर हँस पड़ी।

“अच्छा! नाम बताओ।”

“मारिया...”

नाम लेते ही जैसे आरव की आवाज़ में एक नरमी उतर आई।

निधि ने गौर से उसे देखा। “अच्छा नाम है। और?”

“बहुत अच्छी है दीदी... मरीजों से जिस तरह बात करती है न, लगता है दर्द आधा हो जाता है। पढ़ाई में तेज है, पर घमंड नहीं। कभी-कभी लगता है...”

“क्या लगता है?”

“लगता है... उसके साथ बात करके सुकून मिलता है। जैसे दिल को कोई हमराज़ मिल गया हो।”

निधि पहले शरारत से मुस्कराई, फिर गंभीर हो गई।

“सुनो आरव, अगर वह लड़की तुम्हारे लिए वक़्त गुज़ारने की चीज़ है, तो अभी रुक जाओ। किसी के जज़्बात से खेलना गुनाह है।”

“नहीं दीदी!” आरव की आवाज़ काँप गई, “मैं उसे कभी तकलीफ़ नहीं दे सकता।”

निधि की आँखें कोमल हो उठीं।

“तो फिर उसे सम्मान देना। प्रेम अगर है, तो वह उत्तरदायित्व भी है।”

हवा से एक फूल छत पर आ गिरा।

निधि ने उसे उठाकर कहा — "जानते हो, रिश्ते ऐसे ही शुरू होते हैं — लाइब्रेरी की फुसफुसाहट से किसी मूवी के रविवार से और फिर धीरे-धीरे दिल की ज़मीन पर के फूल खिलने लगते हैं।

* * *

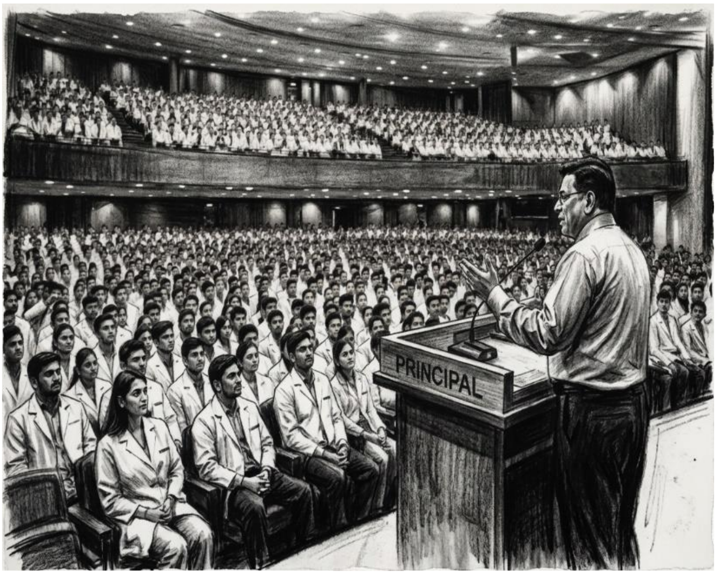
PRINCIPAL

आरव की आँखें नम थीं। उस रात गाँव की हवा में एक रूहानी ख़ुशबू थी। यहाँ जीवन में आत्मीयता थी। वहाँ शरीरों के रहस्य खुलते थे, **यहाँ मन के द्वार धीरे-धीरे खुलते थे। जैसे किसी ने उसके मन की उलझी हुई गाँठों को धीरे से छू लिया हो।**

उसी शांति में उसे बार-बार वही दिन याद आ रहा था, **फ्रेशर्स डे** जब वह पहली बार मारिया से इतने करीब से मिला था। मेडिकल कॉलेज का वह फ्रेशर्स डे अपने भीतर अनगिनत कहानियों की परछाइयाँ समेटे होता है। यह केवल नए विद्यार्थियों के स्वागत का औपचारिक अवसर नहीं, बल्कि उन भावनाओं का आरंभ होता है, जो अनजाने ही आने वाले वर्षों में जीवन की दिशा तय कर देता हैं।

यह दिन नए चेहरों को पहचान में बदलने का, अजनबियों को अपनापन देने का, और सीनियर्स के साथ एक सहज संबंध बनाने का माध्यम बन जाता है। मेडिकल जीवन की कठिन शुरुआत भी इस दिन एक मधुर स्पर्श पा लेती है — जैसे कोई कह रहा हो, "तुम अकेले नहीं हो। "

फ्रेशर्स डे के बाद छात्र केवल "नए" नहीं रहते — वे इस विशाल, जीवंत और संवेदनशील परिवार का अभिन्न हिस्सा बन जाते हैं। और कभी-कभी इसी दिन, अनजाने में, किसी के जीवन में कोई खास व्यक्ति भी प्रवेश कर जाता है — चुपचाप, बिना किसी आहट के।

मेडिकल कॉलेज का वह **फ्रेशर्स डे** अपने भीतर न जाने कितनी कहानियाँ समेटे होता है। यह केवल नए विद्यार्थियों के स्वागत का अवसर नहीं होता, बल्कि यह उन अनगिनत भावनाओं का आरंभ होता है, जो आने वाले वर्षों में जीवन की दिशा तय कर देती हैं। यह दिन नए दोस्तों से मिलने, सीनियर्स से जुड़ने और मेडिकल जीवन की शुरुआत को आत्मीयता से अपनाने का एक अनुपम अवसर देता है।

उस दिन कॉलेज का परिसर जैसे किसी उत्सव-धाम में परिवर्तित हो उठा था। मुख्य भवन के सामने रंग-बिरंगी झालरों की लहराती पंक्तियाँ वातावरण में उल्लास का स्पंदन भर रही थीं। हर दीवार मानो मुस्कुरा रही थी — "स्वागत

है!" बड़े-बड़े अक्षरों में अंकित "WELCOME FRESHERS" हवा के साथ लहराकर हर नए छात्र को अपने स्नेहिल आलिंगन में समेट लेना चाहता था। प्रवेश द्वार पर सजे गेंदा और गुलाब के फूलों की सुवास, वातावरण में एक मधुर, कोमल सुगंध घोल रही थी, जो मन को अनायास ही प्रसन्न कर देती थी।

ऑडिटोरियम के भीतर प्रवेश करते ही जैसे एक अलग ही लोक का अनुभव होता था। मंच पर नीले और सफेद रंग की थीम में सजी पृष्ठभूमि, झिलमिलाती रोशनियाँ, और हल्की-सी धुंध — सब मिलकर एक स्वप्निल दृश्य रच रहे थे। कुर्सियों पर बैठे छात्र-छात्राओं के चेहरों पर उत्साह और हल्की-सी घबराहट एक साथ झलक रही थी। सीनियर्स इधर-उधर घूमते हुए अपनत्व भरे व्यवहार से सबको सहज बनाने में लगे थे।

कार्यक्रम की शुरुआत एंकर के उत्साहपूर्ण स्वर से हुई —

"आज हम अपने नए साथियों का स्वागत करते हैं, जो आने वाले वर्षों में इस परिवार का अभिन्न हिस्सा बनेंगे। "

एक-एक करके फ्रेशर्स को मंच पर आमंत्रित किया जाने लगा। हर कोई अपना नाम, अपना शहर और अपने सपनों की एक झलक प्रस्तुत कर रहा था। कोई डॉक्टर बनकर सेवा का संकल्प लिए था, तो कोई शोध के माध्यम से कुछ नया करने की आकांक्षा लिए हुए था।

जब मारिया का नाम पुकारा गया, वह मंच की ओर बढ़ी। उसके कदमों में हल्की-सी झिझक थी, पर चेहरे पर एक शांत, स्वाभाविक आत्मविश्वास झलक रहा था।

"मेरा नाम मारिया है…"

उसकी आवाज़ में एक मधुर कंपन था — कम शब्द, पर गहरा असर।

आरव की बारी आई, तो उसने भी सहज शब्दों में अपना परिचय दिया —

"मैं आरव हूँ… और मैं यहाँ सिर्फ डॉक्टर बनने नहीं, बल्कि एक अच्छा इंसान बनने आया हूँ। "

और शायद — यही वह क्षण था, जब आरव ने पहली बार उस भीड़ में उसे देखा — मारिया।

मारिया सफेद सूट में थी। उसके खुले बाल कंधों पर धीरे-धीरे झूल रहे थे, और उसकी आँखों में एक अनकही गहराई थी — जैसे शब्दों के बिना ही बहुत कुछ कह देने की क्षमता हो। आरव की दृष्टि कुछ पल के लिए वहीं ठहर गई। वह समझ नहीं पाया — यह आकर्षण था, जिज्ञासा थी, या कुछ और… पर इतना अवश्य था कि वह चेहरा अब भीड़ का हिस्सा नहीं रह गया था — वह स्मृति बन चुका था।

कार्यक्रम का सबसे प्रतीक्षित भाग आरंभ होने वाला था — सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ।

सबसे पहले मंच पर आई नंदिता मारिया की रूममेट।

नंदिता के कदमों में जैसे लय स्वयं निवास करती थी। जैसे ही संगीत प्रारंभ हुआ, पूरा हॉल एकदम शांत हो गया। उसने शास्त्रीय और आधुनिक नृत्य का ऐसा मनोहर समन्वय प्रस्तुत किया कि हर दर्शक मंत्रमुग्ध हो उठा।

उसकी हर मुद्रा, हर भाव, हर घुमाव — सब कुछ इतना सजीव था मानो वह शब्दों के बिना एक कथा कह रही हो। उसकी आँखों में भावनाओं का अथाह सागर था — कभी उल्लास, कभी विरह, कभी प्रेम।

मारिया गर्व से उसे निहार रही थी।

और आरव… वह नृत्य देख रहा था, पर उसकी दृष्टि बार-बार मारिया की ओर लौट आती थी।

नंदिता का नृत्य समाप्त हुआ, तो पूरा सभागार तालियों की गूँज से भर उठा। वह क्षण मानो समय की धारा में ठहर गया।

कार्यक्रम आगे बढ़ता रहा — गाने, नाटक, हँसी-मजाक…पर आरव और मारिया के लिए समय जैसे किसी और दिशा में बह रहा था।

वे पास-पास बैठे थे, पर उनके बीच शब्दों का कोई सेतु नहीं था।

फिर भी, उनकी आँखें निरंतर संवाद कर रही थीं।

कभी हल्की-सी मुस्कान...

कभी नजरें चुराना...

कभी अचानक एक-दूसरे को देख लेना...

यह सब इतना स्वाभाविक था कि उन्हें स्वयं भी समझ नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे दो अनजान रास्ते बिना किसी घोषणा, बिना किसी शोर के, एक-दूसरे में विलीन हो रहे हों।

शायद यह केवल उस दिन का साथ नहीं था...शायद यह आने वाले वर्षों की प्रस्तावना थी... या शायद — पूरी जिंदगी की।

जैसे-जैसे रात गहराती गई, कार्यक्रम और अधिक जीवंत होता गया।

डीजे की धुन पर सब थिरकने लगे। हँसी, तालियाँ और संगीत — सब मिलकर एक ऐसा वातावरण रच रहे थे, जहाँ हर कोई स्वयं को भूल गया था।

सीनियर्स और जूनियर्स के बीच की दूरी अब विलुप्त हो चुकी थी। सब एक साथ थे— एक परिवार की तरह।

आरव और मारिया भी उसी भीड़ का हिस्सा थे — पर उनकी दुनिया कुछ अलग थी।

वे साथ खड़े थे, पर फिर भी एक सूक्ष्म दूरी थी — और उसी दूरी में एक अद्‌भुत निकटता छिपी हुई थी।

रात के अंत में मंच पर कॉलेज के प्राचार्य पधारे।

उनकी वाणी में गंभीरता थी, पर साथ ही एक स्नेहिल अपनापन भी। “प्रिय विद्यार्थियों,” उन्होंने कहा, “आज का दिन केवल एक समारोह नहीं है। यह आपके जीवन की एक नई यात्रा का आरंभ है। ″

उन्होंने ठहरकर सबकी ओर देखा “आप यहाँ केवल पढ़ने नहीं आए हैं। आप यहाँ जीवन, रिश्तों और जिम्मेदारियों को सीखने आए हैं। ″

उनके शब्द प्रत्येक हृदय में गहराई तक उतरते चले गए। “दोस्त बनाइए, अनुभव अर्जित कीजिए, और सबसे महत्वपूर्ण एक अच्छे इंसान बनिए। ″

तालियों की गूंज के बीच उनका भाषण समाप्त हुआ।

कार्यक्रम समाप्त हो चुका था। रोशनियाँ अब धीरे-धीरे मद्धम पड़ रही थीं, जैसे दिनभर की चहल-पहल के बाद स्वयं भी विश्राम चाहती हों। संगीत की गूँज अब केवल स्मृति बनकर वातावरण में तैर रही थी। भीड़ छँटने लगी थी — हँसी, बातचीत, कदमों की आहट… सब धीरे-धीरे दूर होते जा रहे थे।

आरव और मारिया — दोनों कुछ क्षणों तक वहीं खड़े रहे।

न कोई आग्रह, न कोई औपचारिक विदा — बस एक अनकही-सी सहमति, कि अब चलना चाहिए।

फिर दोनों ने अपने-अपने कदम मोड़ लिए — वह अपने लड़कों के हॉस्टल की ओर, और वह अपने छात्रावास की ओर।

पर यह केवल रास्तों का अलग होना था — मन तो अब भी एक अदृश्य सेतु से जुड़ा हुआ था।

* * *

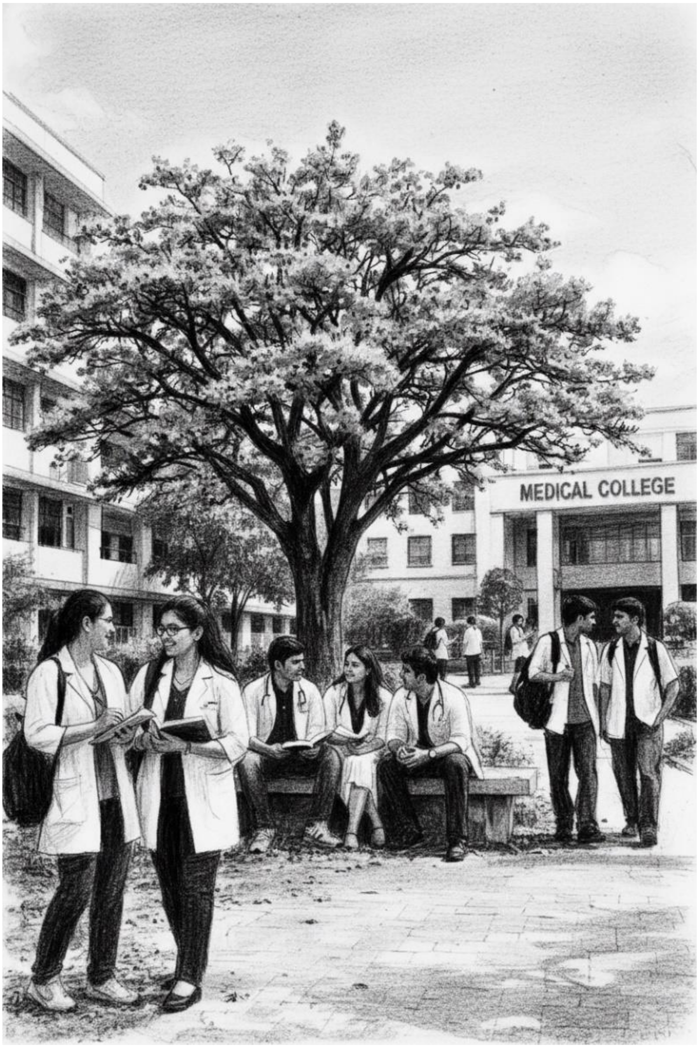
MEDICAL COLLEGE

बसन्त की पहली आहट थी — नए सेमेस्टर की शुरुआत हो चुकी थी। हर छात्र के लिए यह महाविद्यालय का पहला वसंत था, जिसमें एक नई ऊर्जा, एक नई उम्मीद और अनजानी-सी उत्सुकता घुली हुई थी।

चिकित्सा महाविद्यालय के परिसर के बाहर फैले वनखंड में पलाश के वृक्ष दहक उठे थे। उनकी रक्तिम आभा मानो आकाश को छू लेने की आकांक्षा से भरी हुई थी। दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था जैसे धरती ने अग्नि के दीपक जला दिए हों।

उन वृक्षों की शुष्क शाखाओं पर पत्तों का कहीं नामोनिशान नहीं था — सिर्फ फूल थे, गहरे लाल, प्रखर और पूर्णतः अनावृत… जैसे प्रकृति ने अपने समस्त भाव बिना किसी आड़ के प्रकट कर दिए हों।

बसन्त प्रकृति का ही नहीं, आत्मा का भी उत्सव होता है। पलाश का वृक्ष वर्ष भर निस्तब्ध खड़ा रहता है शुष्क, संकोचशील, मानो अपने ही अस्तित्व से संकुचित। परन्तु बसन्त के आते ही वह पत्तों को भुलाकर पहले पुष्पों को जन्म देता है, जैसे भीतर की अग्नि को स्वीकार कर लिया हो। यह स्वीकार ही उसका सौन्दर्य है, दाह में भी दीप्ति, त्याग में भी उत्सव।

उसी समय महाविद्यालय के बाहर फैले उस वनखंड में नवागंतुक छात्रों का समूह एकत्र हुआ था... हँसी, गीत और भविष्य के सुनहरे सपनों के साथ। चिकित्सा-विज्ञान की कठोर साधना प्रारम्भ करने से पूर्व यह एक हल्का-सा विराम था, जैसे जीवन अपने गंभीर दायित्वों से पहले कुछ क्षण स्वप्न देख लेना चाहता हो।

मारिया श्वेत सलवार-कुर्ते में थी निर्मल, सहज, और अपनी गंभीर दृष्टि में एक सूक्ष्म जिज्ञासा लिए हुए। उसके श्याम केश सरलता से बँधे थे, और मुख पर बसन्त की मंद आभा थी। आरव भीड़ से कुछ पृथक खड़ा था, हाथ में एनाटॉमी की पुस्तक मानो वह अभी से अपने उद्देश्य को स्मरण कर रहा हो। उसका सांवला, दृढ़ मुख और स्थिर दृष्टि उसके ग्रामीण संस्कारों की गवाही देते थे; उसमें एक प्रकार की आत्मसंयत गरिमा थी, जो अनायास आकर्षित करती थी।

जब समूह ने पलाश के नीचे बैठकर गीत गाए, तब अनायास दोनों की दृष्टियाँ मिलीं। उस क्षण कोई वचन नहीं हुआ, परंतु मौन ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। न हँसी थी, न संकोच केवल एक सूक्ष्म पहचान, जैसे दो अपरिचित पथिक अचानक समझ लें कि वे एक ही दिशा में जा रहे हैं। मारिया ने जब पहली बार उन रक्तिम पुष्पों को देखा, तो उसके मुख से अनायास निकला, "लगता है, पेड़ों ने अपने हृदय बाहर टाँग दिए हैं। "आरव ने उसकी ओर देखा। उस वाक्य में प्रकृति का वर्णन कम, संवेदना अधिक थी। वह केवल फूलों की बात न थी; वह उस साहस की बात थी, जिसमें कोई अपनी भीतरी अग्नि को छिपाने के स्थान पर उसे स्वीकार कर लेता है। उसी क्षण, बिना किसी उद्घोष, बिना किसी प्रतिज्ञा के, उनके मध्य एक सूक्ष्म सेतु बन गया।

बसन्त ऋतु-परिवर्तन मात्र नहीं, वरन् आत्मा के किसी गुप्त द्वार का उद्घाटन है। जब पृथ्वी अपनी निस्तब्ध पीड़ा को त्यागकर नव-अंकुरों की भाषा बोलने लगती है, तब मनुष्य-हृदय भी अपनी भीतरी नीरवता को रंगों में रूपान्तरित करना चाहता है। इसी काल में पलाश अपने दहकते रक्तिम आभा के साथ वन-वन में ऐसे प्रज्वलित हो उठते हैं, मानो पृथ्वी ने अपने अंत: करण की ज्वाला को पुष्पाकार दे दिया हो।

महाकवि कालिदास ने 'ऋतुसंहार' में बसन्त का जो चित्र अंकित किया है, वह इसी जीवनोत्सव का काव्य है। उनके वर्णन में आम्र-मंजरियों से गुँजित वायु, कोकिल की मधुर पंचम ध्वनि, पुष्पित लताओं से अलंकृत वन, और कामदेव का चंचल बाण सब मिलकर एक ऐसा वातावरण रचते हैं, जिसमें प्रकृति स्वयं युवा प्रतीत होती है। कालिदास के लिए बसन्त केवल पुष्पों का मौसम नहीं, अपितु चेतना का मधु-मास है जहाँ धरा और गगन, पवन और प्राणी, सभी प्रेम की अनुकम्पा से स्पंदित होते हैं।

उसी कालिदासीय बसन्त की सूक्ष्म छाया उस दिन महाविद्यालय परिसर में उतर आई थी। कोकिल की दूरस्थ कूक जैसे किसी अनजाने रहस्य की सूचना दे रही थी। पवन में आम्र-कलियों की अलक्षित गन्ध थी, और पलाश के पुष्पों की अग्नि-रेखा आकाश तक खिंची हुई प्रतीत होती थी।

आरव और मारिया के जीवन में भी बसन्त इसी प्रकार आया न किसी औपचारिक प्रस्ताव के साथ, न किसी प्रतिज्ञा के शब्दों में। वह एक अनुभूति थी, जो अनायास हृदय की पगडंडी पर उतर आई। जैसे पलाश का वृक्ष सम्पूर्ण वर्ष सूना प्रतीत होता है, परन्तु एक क्षण में अग्नि-शिखाओं से भर उठता है, वैसे ही उनका स्नेह भी अनभिज्ञता की शान्त भूमि पर धीरे-धीरे अंकुरित होकर अचानक चेतना बन गया पलाश की प्रकृति विलक्षण है वह पत्तों की हरित छाया को स्थगित कर पहले अपने रक्तिम पुष्पों को जन्म देता है। यह त्याग और दाह का प्रतीक है। प्रेम भी क्या ऐसा ही नहीं? वह पहले मनुष्य को भीतर से दग्ध करता है, उसकी निजता को भंग करता है, उसके अहं को चुनौती देता है, और तब कहीं उसकी शोभा जगत् के सम्मुख प्रकट होती है।

मारिया का हृदय प्रार्थना की निस्तब्धता से उपजा था; उसके भीतर करुणा की श्वेत दीप्ति थी। आरव का मन कर्तव्य की कठोर भूमि पर अंकुरित हुआ था; उसमें परिश्रम और उत्तरदायित्व का धातु-सा दृढ़ संयम था। बसन्त ने इन दोनों प्रवृत्तियों के मध्य एक अदृश्य सेतु निर्मित कर दिया। वे जब साथ-साथ चिकित्सा-विज्ञान के जटिल सूत्रों पर विचार करते, तब भी उनके बीच एक ऐसी मौन चेतना विद्यमान रहती, जो किसी भी पाठ्य-पुस्तक की परिधि से परे थी।

पलाश का पुष्प सुवासहीन होता है, किन्तु उसकी आभा इतनी तीव्र होती है कि वह दूर से ही अपनी उपस्थिति का उद्घोष कर देता है। आरव और मारिया का प्रेम भी वैसा ही था वह शब्दों में नहीं, दृष्टि की अनुकम्पा में, सह-अध्ययन की एकाग्रता में, और भविष्य की सामूहिक आकांक्षा में अभिव्यक्त होता था। उसमें उच्छृंखलता नहीं थी; उसमें एक गम्भीर तेज था जैसे बसन्त की उजली धूप, जिसमें उष्मा भी है और मर्यादा भी।

और उस दिन, पलाश के नीचे आरम्भ हुआ वह मौन संवाद, उनके जीवन की कथा का प्रथम रंग बन गया रक्तिम, दीप्त, और भीतर कहीं गहरा स्पर्श करता हुआ।

अभी हाल में ही में प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने पास के एक गाँव में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया। सबमें उत्साह था नई किताबें, नए दोस्त, और सेवा का नया जज़्बा। कॉलेज की बस सुबह-सुबह रवाना हुई। आरव खिड़की की

सीट पर चुपचाप बैठा था। हाथ में फार्माकोलॉजी की किताब, पर आँखें शब्दों पर नहीं ठहर रही थीं। तभी मारिया आई। सीटें लगभग भर चुकी थीं। वह क्षणभर झिझकी, फिर धीमे से बोली—
"क्या मैं यहाँ बैठ सकती हूँ? "

आरव ने सिर उठाया।
"जी... क्यों नहीं। "

बस चल पड़ी। सड़क पर हल्का कोहरा था। विद्यार्थियों के बीच हँसी-मज़ाक चल रहा था, पर इन दोनों के बीच एक अनकही खामोशी थी जो बोझिल नहीं, बल्कि मधुर थी।

गाँव पहुँचे तो मिट्टी की सोंधी गंध और लोगों के चेहरों पर उम्मीद की चमक थी। एक बूढ़ी अम्मा अपनी नब्ज़ दिखाने आई। आरव ध्यान से जाँच करने लगा, पर अम्मा की आँखों में चिंता थी। मारिया पास बैठ गई, उसने अम्मा का हाथ थाम लिया।

"घबराइए मत अम्मा, सब ठीक होगा," उसने बड़ी नर्मी से कहा।

उस स्पर्श में ऐसी तसल्ली थी कि अम्मा मुस्कुरा उठीं।

आरव ने पहली बार उस क्षण मारिया को केवल सहपाठी नहीं, बल्कि एक संवेदनशील इंसान के रूप में देखा। उसके भीतर एक हलचल हुई जैसे दिल ने पहली बार कोई नया अहसास महसूस किया हो।

दोपहर के विश्राम में सब विद्यार्थी पास के तालाब की ओर निकल गए। पेड़ों की छाँव में बैठकर कोई गीत गा रहा था, कोई तस्वीरें ले रहा था। आरव और मारिया थोड़ी दूर एक वृक्ष के नीचे जा बैठे।

मारिया ने मुस्कराकर कहा —
"तुम बहुत कम बोलते हो। "

आरव ने हल्की हँसी के साथ उत्तर दिया —
"और तुम बहुत ज़्यादा। "

दोनों हँस पड़े।

कुछ देर बाद मारिया का स्वर गंभीर हो गया —
“आरव, क्या तुम्हें कभी डर नहीं लगता? इतने बड़े संसार में, इतने अलग-अलग लोगों के बीच अपना रास्ता चुनने का? ”

आरव ने ज़मीन पर गिरे एक फूल को उठाया। “डर तो लगता है। पर शायद साथ हो, तो रास्ता आसान हो जाता है। ” मारिया ने उसकी ओर देखा। वह दृष्टि लंबी थी, मौन थी, पर उसमें अनगिनत प्रश्न थे। उस क्षण दोनों के बीच जो निकटता बनी, वह इज़हार से नहीं, एहसास से उपजी थी। न कोई वादा, न कोई कसमें बस एक सुकून, एक यक़ीन कि वे एक-दूसरे के दिल में जगह बना चुके हैं।

* * *

चिकित्सा महाविद्यालय की सुबहें साधारण नहीं होतीं। वहाँ सूर्य के साथ केवल प्रकाश नहीं उगता — वहाँ प्रश्न उगते हैं। जीवन क्या है? शरीर क्या है? मृत्यु कहाँ आरम्भ होती है? और क्या पीड़ा केवल तंत्रिकाओं में होती है, या आत्मा में भी? आरव और मारिया जब प्रथम वर्ष में एनाटॉमी हॉल में पहुँचे थे, तब उनके सम्मुख पहली बार वह मौन शिक्षक उपस्थित हुआ था एक देह, जिसने जीवन त्यागकर ज्ञान का रूप धारण किया था।

आरव और मारिया अपनी-अपनी टेबल के समीप खड़े थे। उनके सम्मुख वह देह थी, जो अब शब्दहीन थी, पर शिक्षामयी थी। प्रथम दिवस की हल्की झिझक अब क्रमशः स्वभाव, में बदल चुकी थी। स्कैल्पेल उठाने से पूर्व दोनों ने अनायास ही कुछ क्षण मौन साधा — जैसे कोई प्रार्थना हो, जिसमें वाणी की आवश्यकता नहीं। मारिया ने धीमे स्वर में कहा, "क्या तुम्हें नहीं लगता, आरव यह केवल शरीर नहीं है? यह किसी का अंतिम निर्णय है। "आरव ने उसकी ओर देखा। उसकी दृष्टि में आज अध्ययन की तल्लीनता से अधिक एक भावुक जिज्ञासा थी। "हाँ," उसने उत्तर दिया, "और शायद इसी कारण यह कक्ष मुझे किसी तपस्थली-सा प्रतीत होता है। "क्षणभर के लिए उसकी स्मृति में महर्षि दधीचि की कथा कौंध गई, वह ऋषि, जिन्होंने देवताओं के कल्याण के लिए अपनी अस्थियाँ अर्पित कर दी थीं। उनकी हड्डियों से वज्र बना था एक ऐसा अस्त्र, जिसने अधर्म का अंत किया। आरव ने धीरे से कहा, "दधीचि ने अपनी अस्थियाँ देकर वज्र बनवाया था। यहाँ भी कोई अपनी देह देकर हमारे भीतर एक वज्र गढ़ रहा है ज्ञान का, दक्षता का, और शायद करुणा का। "मारिया की आँखों में एक आर्द्र चमक उतर आई। "पर वह वज्र केवल शक्ति न बने," उसने कहा, "वह संरक्षण बने पीड़ा के विरुद्ध, असहायता के विरुद्ध। "वे दोनों कुछ क्षण उस निस्तब्ध देह को देखते रहे। वह देह अब किसी परिवार की स्मृति न थी; वह समस्त मानवता की धरोहर बन चुकी थी। उसकी अस्थियाँ, स्नायुएँ, धमनियाँ सब भविष्य के अनेकों जीवन की रक्षा के लिए मार्ग प्रशस्त कर रही थीं। स्कैल्पेल ने जब त्वचा को स्पर्श किया, तो वह केवल शल्यक्रिया की आरंभिक रेखा न थी; वह एक संस्कार का आरंभ था। आरव ने अनुभव किया कि वह केवल रचना-विन्यास नहीं देख रहा वह जीवन के अद्भुत स्थापत्य को समझ रहा है। मारिया को लगा जैसे यह देह उन्हें एक मौन उपदेश दे रही हो

“नश्वरता से मत डरो; उसे अर्थ दो। दधीचि का त्याग स्वेच्छा का था उन्होंने भय से नहीं, लोकहित की संकल्पना से देह अर्पित की।

आधुनिक देहदान भी उसी चेतना का विस्तार है। कोई व्यक्ति यह निर्णय करता है कि मृत्यु के बाद भी उसका शरीर ज्ञान का साधन बने। आरव और मारिया जैसे विद्यार्थियों के लिए यह केवल अध्ययन नहीं, एक मौन ऋण है। वे केवल संरचना नहीं देख रहे वे किसी के अंतिम निर्णय का सम्मान कर रहे हैं।

* * *

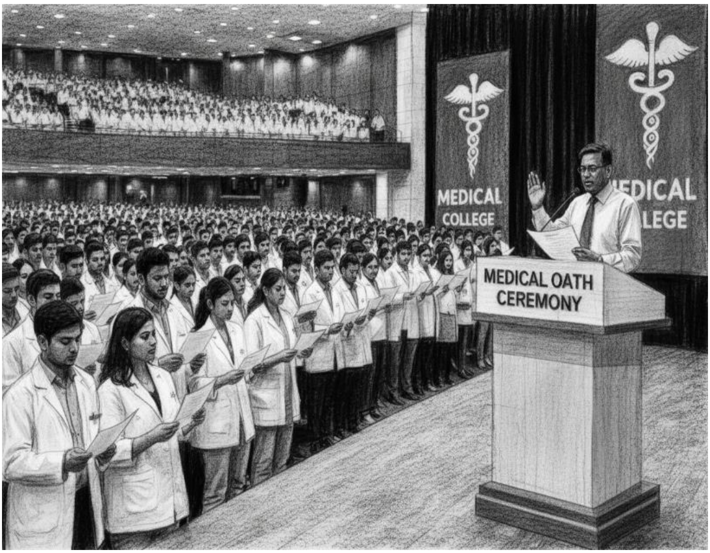
MEDICAL
COLLEGE
EDICAL
LLEGE
MEDICAL OATH
CEREMONY

कुछ महीनों की साधना के बाद, चिकित्सा-शिक्षा की यात्रा में वह पावन प्रारंभिक क्षण साक्षात् उपस्थित हुआ। महाविद्यालय में नवप्रवेशी छात्रों के लिए एक औपचारिक समारोह आयोजित हुआ चिकित्सकीय शपथ का।

विशाल सभागार में श्वेत कोट पहने छात्र-छात्राएँ एकत्र थे। मंच पर प्राध्यापकगण गंभीर मुद्रा में विराजमान थे। वातावरण में एक ऐसी पवित्रता थी, जो उत्सव से अधिक दीक्षा का आभास देती थी। जब सामूहिक रूप से शपथ-पाठ आरम्भ हुआ, मेडिकल कॉलेज की दीवारें इस शपथ समारोह की मौन साक्षी बन गईं। " तो आरव और मारिया ने भी स्वर मिलाया

रोगी के कल्याण को सर्वोपरि रखने की प्रतिज्ञा,
जीवन की रक्षा के लिए समर्पण,
गोपनीयता और नैतिकता के पालन का वचन,
और मानवता के प्रति अटूट निष्ठा का संकल्प।

शब्दों की प्रतिध्वनि उनके भीतर देर तक गूँजती रही। आरव को लगा मानो वह केवल चिकित्सक बनने की दिशा में नहीं बढ़ रहा, अपितु अपने चरित्र को किसी दृढ़ अनुशासन में बाँध रहा है।

मारिया को प्रतीत हुआ जैसे यह शपथ किसी बाहरी संस्था की अपेक्षा स्वयं अपनी आत्मा से किया गया वादा है। समारोह के पश्चात् जब वे पुनः एनाटॉमी हॉल से होकर गुज़रे, तो उनके कदम स्वतः धीमे हो गए। "आज शपथ लेते समय," मारिया ने कहा, "मुझे लगा हम केवल ज्ञान ग्रहण नहीं कर रहे, हम किसी के विश्वास को ग्रहण कर रहे हैं। "आरव ने उस देह की ओर देखा, जो निस्तब्ध पड़ी थी।

"शायद यही कारण है," उसने उत्तर दिया, "कि इस कक्ष में प्रवेश करते समय मुझे अपराध-बोध नहीं, कृतज्ञता का अनुभव होना चाहिए। हम इस त्याग के ऋणी हैं। यदि हम अपनी शपथ का पालन न करें, तो यह त्याग व्यर्थ हो जाएगा। "उनके लिए चिकित्सकीय शपथ अब औपचारिक घोषणा न रही; वह एक आंतरिक अनुबंध थी। दधीचि का देह-त्याग, देहदान करने वाले अज्ञात व्यक्ति का मौन समर्पण, और आज लिया गया नैतिक वचन तीनों एक सूत्र में बँध गए।

मारिया ने धीरे से कहा "यदि प्रेम हमें संवेदनशील बनाता है और शपथ हमें संयमित, तो दोनों मिलकर ही सच्चा चिकित्सक गढ़ते हैं। "आरव ने उसकी

ओर देखा। उस क्षण उनके बीच कोई व्यक्तिगत भावुकता नहीं थी; वहाँ एक साझा संकल्प था। पलाश की अग्नि-सी दीप्ति उनके भीतर भी जल उठी थी वह अग्नि जो अहं को भस्म करती है,वह अग्नि जो वज्र गढ़ती है,और वही अग्नि जो प्रेम को कर्तव्य में रूपान्तरित कर देती है। उस दिन से उनके लिए चिकित्सा केवल व्यवसाय की दिशा न रही; वह तप, त्याग और करुणा की साधना बन गई और उस साधना में उनका प्रेम एक मौन सहयात्री की भाँति साथ चलता रहा।

नंदिता और मारिया रूममेट्स और बेहद करीबी, मानो दो दिल, पर एक ही धड़कन। उनकी मित्रता केवल साथ रहने का संबंध नहीं थी, वह आत्मीयता का वह सूक्ष्म सूत्र था जो शब्दों से नहीं, अनुभूति से बँधा था। छात्रावास के उस छोटे से कक्ष में दो भिन्न स्वभाव, दो अलग पृष्ठभूमियाँ, दो स्वतंत्र व्यक्तित्व साथ रहते थे पर उनके बीच की लय इतनी सामंजस्यपूर्ण थी कि लगता था, एक की धड़कन दूसरे के हृदय तक सहज पहुँच जाती है।

नंदिता स्वभाव से गंभीर, विवेकशील और संयत थी। उसके व्यक्तित्व में एक स्थिर शांति थी, जैसे किसी झील का निर्मल जल ऊपर से शांत, भीतर से गहरा। वह बातों में मितव्ययी थी, पर उसकी मौन उपस्थिति ही आश्वस्त कर देने वाली होती। यदि मारिया किसी दुविधा में होती, तो नंदिता बिना अधिक प्रश्न किए उसकी दृष्टि की भाषा पढ़ लेती। उसकी आँखों में करुणा थी, पर वह करुणा दुर्बलता नहीं, अपितु सहृदय शक्ति थी।

मारिया दूसरी ओर अधिक भावप्रवण थी सहज, प्रकाशमान और स्निग्ध। उसके भीतर संवेदना की मधुर तरंगें थीं। वह छोटी-छोटी बातों में भी सौंदर्य खोज लेती, और अपनी प्रसन्नता से कक्ष को प्राणवान कर देती। किंतु उस सहज हँसी के पीछे भी एक गंभीर मन था, जो संबंधों को हल्के में नहीं लेता था।

रात्रि के नीरव क्षणों में, जब छात्रावास का कोलाहल थम जाता, दोनों अपने जीवन, स्वप्नों और आशंकाओं पर संवाद करतीं। कभी परीक्षा की चिंता, कभी परिवार की अपेक्षाएँ, तो कभी भविष्य की अनिश्चित राहें सब कुछ उस छोटे से कक्ष की दीवारों ने सुना था। उनकी मित्रता में प्रतिस्पर्धा नहीं, परस्पर उन्नयन की भावना थी। यदि एक का मन विचलित होता, तो दूसरी उसका धैर्य बन जाती।

नंदिता का सौंदर्य उसकी सादगी में निहित था। हल्के सूती वस्त्र, सधे हुए केश, और आँखों में विचारों की दीप्ति। उसका चेहरा अत्यधिक चंचल नहीं, पर गहन था जैसे कोई विचारमग्न प्रतिमा। उसकी मुस्कान अल्प होती, पर उसमें आत्मीय ऊष्मा का स्पर्श रहता। वह ऐसी मित्र थी जो अधिक बोलकर नहीं, अधिक समझकर साथ देती है।

मारिया के रूप में कोमलता थी, पर नंदिता में संतुलन। यदि मारिया हृदय की कविता थी, तो नंदिता विचार की गद्यधारा। दोनों मिलकर एक सम्यक लय रचती थीं। मारिया कई बार अपने हृदय की अनकही उलझनें नंदिता के सामने रख देती विशेषतः वे भाव जो आरव से अनायास जुड़ते जा रहे थे। नंदिता सुनती, मुस्कराती, और गंभीर स्वर में कहती "स्नेह तभी सुंदर है, जब वह तुम्हें अधिक दृढ़ बनाए। "नंदिता का चरित्र दृढ़ नैतिक आधार पर निर्मित था। वह संबंधों को पवित्रता की दृष्टि से देखती थी। उसके विचार में प्रेम कोई क्षणिक आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मा की परिपक्वता है। इसी कारण वह मारिया के भावों को हल्के में नहीं लेती थी |

दिसंबर की सर्दियों की रात थी। हॉस्टल के कमरे की खिड़कियों से हल्की ठंडी हवा आ रही थी, और बाहर की बरसाती मिट्टी की खुशबू कमरे में फैल रही थी। कमरे में छोटे–से हीटर की हल्की गर्मी और कॉफी की सुगंध ने माहौल को और अधिक आरामदायक बना दिया था।

मारिया अपने डेस्क पर बैठी थी, हाथ में गर्म कप कॉफी। उसके सामने नंदिता, रूम पार्टनर और सबसे करीबी सहेली, बिस्तर पर आराम से लेटी थी। कमरे में किताबें, नोट्स और कुछ फाइलें बिखरी हुई थीं।

"मारी," नंदिता ने मुस्कुराते हुए कहा, "आजकल तुम बिल्कुल खोई–खोई सी लग रही हो। कुछ तो चल रहा है, बताओ? "

मारिया ने झेंपते हुए सिर हिलाया।
"नंदी, यह पढ़ाई का दबाव है। कुछ नहीं। "

नंदिता ने हँसते हुए आँखें चमकाईं।
"अरे, मैं देख रही हूँ। पर सुनो, हॉस्टल में कुछ अफवाहें चल रही हैं।
डॉ. रहमान सर और डॉ. आशा मैडम, लगता है उनके बीच कुछ खास चल रहा है।

"मारिया ने क्षणभर नंदिता की ओर देखा, फिर अपनी कॉफी का कप थाम लिया। उसकी उँगलियाँ हल्का-सा काँप गईं, मानो भीतर कोई विचार चुपचाप सिर उठा रहा हो। "नंदी...," उसने धीमे स्वर में कहा, "मुझे नहीं पता। "

नंदिता ने उत्सुकता और शरारत में कहा "मारी, सच तो सच है। "मारिया, तुमने ध्यान दिया है? " नंदिता ने धीमे स्वर में कहा, "डॉ. रहमान और डॉ. आशा दोनों ही कितने युवा और आकर्षक हैं। उनकी उपस्थिति भर से जैसे पूरा वातावरण बदल जाता है।

डॉ. रहमान की आँखों में गहन सोच और आत्मविश्वास साफ झलकता है। वे कम बोलते हैं, पर जब बोलते हैं तो हर शब्द में ठहराव और भरोसा होता है। उनकी हल्की मुस्कान में एक अलग ही गर्मजोशी है।

और डॉ. आशा वे भी उतनी ही प्रभावशाली हैं। आत्मविश्वासी, सहज और बेहद आकर्षक। उनकी आँखों में करुणा है, पर जैसे कोई अनकहा रहस्य भी छिपा हुआ है।

दोनों की निकटता और उनकी युवा ऊर्जा ही तो छात्रों के बीच चर्चा का कारण बनी हुई हैं..."

मारिया ने हल्की मुस्कान दी, जैसे इन सब बातों को पहले से सुनती आ रही हो।

"नंदी," उसने शांत स्वर में कहा, "ये सब बस अफवाहें हैं... मैं उन पर ध्यान नहीं देती। "

नंदिता ने छेड़ते हुए, हल्की शरारत भरे अंदाज़ में कहा, पर तुम्हारा चेहरा बता रहा है कि तुम्हें पता है। और हाँ, तुम्हारे और आरव के बीच भी कुछ.. सही कहो, तुम उसे पसंद करती हो। "मारिया की आँखें थोड़ी नम हो गईं। उसने सिर झुका लिया।

"ठीक है, मैं मानती हूँ। आरव के लिए, हाँ, मैं अभी भी कुछ महसूस करती हूँ। पर अभी हम फाइनल वर्ष में हैं। NEET PG की तैयारी शुरू हो गई है, हॉस्पिटल और इंटर्नशिप में दिन-रात व्यस्त हैं। समय नहीं है। "

नंदिता ने गंभीरता और हल्की मुस्कान के साथ कहा, "मारी, देखो। पढ़ाई और हॉस्पिटल की जिम्मेदारी बहुत है, पर दिल की धड़कन दबाई नहीं जा सकती।

प्रेम केवल रोमांस नहीं, यह स्नेह और सम्मान की अनुभूति है। जैसे पलाश के फूल बसंत में खिलते हैं, वैसे ही असली भावनाएँ धीरे-धीरे विकसित होती हैं। ”मारिया ने खिड़की से बाहर गिरती हल्की वर्षा को देखा।

“हाँ, नंदी। यही सच है। पढ़ाई, हॉस्पिटल, इंटर्नशिप... सब महत्वपूर्ण हैं। पर दिल की धड़कन भी अपनी राह ढूँढ लेती है। इसे दबाया नहीं जा सकता। ”

नंदिता ने मुस्कुराते हुए कहा, बिल्कुल मारी। तुम और आरव... जैसे पलाश के फूल, बसंत में धीरे-धीरे खिलते हैं। सच्चा प्रेम अपनी राह खुद बना लेता है, चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ। ”

वह रात धीरे-धीरे ठंडी होती चली गई। दोनों की हँसी और बातचीत कमरे में हल्की गूँज सी छोड़ गई।

एक तरफ हॉस्पिटल और पढ़ाई की जिम्मेदारी, दूसरी तरफ दिल की अनकही भावनाएँ।

रात गहरी हो चुकी थी। हॉस्टल के गलियारे में सन्नाटा था। दूर कहीं किसी कमरे में पन्ने पलटने की आवाज़ आ रही थी। घड़ी ने ग्यारह बजाए। नंदिता सो चुकी थी। उसकी धीमी साँसों की लय कमरे में एक शांत संगीत-सी प्रतीत हो रही थी। मारिया अभी भी जाग रही थी। मेज़ पर खुली पुस्तक शरीर क्रिया विज्ञान। सामने चिपके छोटे-छोटे पर्चे “लक्ष्य: स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा”, “समय कम है”, “धैर्य रखो। ”

पर शब्द आँखों से पढ़े जा रहे थे, मन कहीं और था। उसे याद आया आरव।

लाइब्रेरी के कोने में बैठा हुआ, गंभीर चेहरा, नोट्स बनाते समय माथे पर हल्की लकीरें।

वह हमेशा कहता था “मारिया, हमें सिर्फ डॉक्टर नहीं बनना, हमें अच्छे चिकित्सक बनना है। ”

मारिया ने पुस्तक बंद कर दी। उसने खिड़की खोली। बाहर कोहरा था, ठंडी हवा उसके चेहरे को छूकर गुज़री। उसने मन ही मन सोचा “क्या सच में मेरे मन में आरव के लिए सिर्फ मित्रता है? या उससे अधिक कुछ? ”फिर उसने स्वयं को संयत किया। “नहीं, अभी नहीं। अभी लक्ष्य महत्वपूर्ण है। स्नातकोत्तर परीक्षा... विषय की गहराई इंटर्नशिप रोगी की सेवा...”उसी क्षण उसे डॉ.

रहमान सर की बात याद आई, जो उन्होंने एक दिन प्रायोगिक कक्षा में कही थी "चिकित्सा केवल ज्ञान नहीं, संवेदना भी है। जिस दिन संवेदना खो गई, उस दिन डॉक्टर मात्र तकनीकी व्यक्ति रह जाएगा। "

मारिया के मन में हल्की मुस्कान आई। क्या प्रेम भी संवेदना की शिक्षा का एक रूप है?

अगली सुबह पाँच बजे अलार्म बजा। नंदिता ने करवट बदलते हुए कहा, "मारी... उठो। आज से हम समय-सारिणी पूरी कठोरता से पालन करेंगे। "दोनों ने ठंडे पानी से चेहरा धोया। मेज़ पर विषयों की सूची लिखी — शरीर क्रिया विज्ञान, औषध विज्ञान, रोग विज्ञान.. कॉफी के साथ नोट्स दोहराए जाने लगे।

नंदिता ने बीच में हँसते हुए कहा "देखो, हम लोग अभी छात्र हैं। कल को शायद अलग-अलग शहरों में होंगे। इसलिए अभी जो भी है दोस्ती, यादें, पढ़ाई सब पूरे मन से जी लो। "

मारिया ने सिर हिलाया। "हाँ, नंदी। और शायद कुछ भावनाएँ भी। "

नंदिता ने उसे देखा।
"आरव? "

मारिया ने पहली बार बिना झिझक कहा "हाँ। मैं उसे पसंद करती हूँ। शायद उससे भी अधिक।

पर अभी मैं अपने लक्ष्य से समझौता नहीं करूँगी। "नंदिता गंभीर हो गई।

"सही निर्णय। सच्चा प्रेम वही है जो तुम्हें आगे बढ़ने दे, रोके नहीं। "

उस दिन अस्पताल में आपातकालीन वार्ड में बहुत भीड़ थी।

एक वृद्ध रोगी को हृदय संबंधी तकलीफ थी। मारिया ने धैर्य से रक्तचाप नापा, नाड़ी जाँची, और वरिष्ठ चिकित्सक को बुलाया। डॉ. रहमान सर ने उसकी कार्यशैली देखकर कहा "मारिया, तुम्हारे हाथों में स्थिरता है। अभ्यास बनाए रखो। "उनके शब्दों ने उसके आत्मविश्वास को और दृढ़ किया।

मारिया ने महसूस कियाशायद जीवन यही है कर्तव्य, संघर्ष, और उनके बीच कहीं एक कोमल भाव।

उस रात उसने अपनी डायरी में लिखा —

"मैं एक चिकित्सक बनने की राह पर हूँ।
मेरे भीतर दो धाराएँ बह रही हैं —
एक लक्ष्य की, दूसरी भावनाओं की।
क्या दोनों साथ चल सकती हैं?

आरव...
यदि तुम सच में मेरे जीवन का भाग हो,
तो यह समय हमारी परीक्षा है।"

उसने दीपक बुझाया।

कमरे में अंधकार था, पर उसके भीतर एक अजीब-सी स्पष्टता थी।

उसे लगा सर्दियों की इस लंबी रात के बाद जैसे बसंत आता है,वैसे ही कठोर परिश्रम के बाद सफलता, और सच्चे धैर्य के बाद प्रेम।

* * *

DISCIPLINE TODAY SUCCESS TOMORROW
Don't stop until you're proud
NEET PG is not a dream, it's a plan.
Daily Targets
- 10 Qs
- 2 hours
- Revise
Be Stronger Than Your Excuses
PREVENTIVE AND SOCIAL MEDICINE
PARK
FOCUS ON YOUR GOAL
NEET PG
INICET
MARROW
Medicine
Surgery
Pediatrics
OBG
NEET PG MEDEASY

हॉस्टल के गलियारे में पीली रोशनी स्थिर थी और बाहर से आती ठंडी हवा खिड़की के शीशों को हल्का-हल्का हिला रही थी। कमरे के भीतर टेबल लैंप की रोशनी में खुली पुस्तकें, नोट्स और प्रश्नपत्र बिखरे थे। आरव कुर्सी पर झुका बैठा था। सामने शरीर क्रिया विज्ञान का अध्याय खुला था, पर उसकी दृष्टि शब्दों से अधिक अपने भीतर उतर रही थी। वह स्वभाव से अंतर्मुखी था। मित्रों के बीच शांत, पर भीतर से अत्यंत जिज्ञासु और संवेदनशील। जब भी अकेला होता, वह स्वयं से प्रश्न करता। आज भी वही हो रहा था। पन्नों पर हृदय की क्रिया लिखी थी नाड़ी, स्पंदन, संकुचन, प्रसार। अचानक उसे लगा शरीर का हृदय रक्त को प्रवाहित करता है, पर जीवन का हृदय उद्देश्य को। यदि उद्देश्य रुक जाए, तो मनुष्य भीतर से शिथिल हो जाता है।

उसके मन में गाँव की स्मृतियाँ उभर आईं। मिट्टी का आँगन, माँ का चेहरा, उनकी आँखों में अटूट विश्वास। माँ का वह वाक्य "तू बस पढ़, बेटा" उसके लिए केवल प्रेरणा नहीं, व्रत था। उसे लगता था कि उसकी हर पुस्तक के पन्नों के पीछे माँ का त्याग छिपा है।

इन्हीं विचारों के बीच उसके मन में एक और स्वर उठता स्वामी विवेकानंद के विचारों का। कॉलेज के दिनों से ही वह उनके साहित्य का पाठक था। उसके मेज़ की दराज़ में आज भी उनकी एक छोटी-सी पुस्तक रखी थी। कई बार जब मन डगमगाता, वह वही पढ़ता। उसे स्मरण हुआ "उठो, जागो और लक्ष्य की प्राप्ति तक रुको मत। "वह पंक्ति उसके भीतर जैसे आग की रेखा की तरह अंकित थी।

वह सोचने लगा यदि लक्ष्य स्पष्ट है, तो भावनाएँ बाधा क्यों बनें? स्वामी जी ने तो यह भी कहा था कि **"शक्ति ही जीवन है, दुर्बलता ही मृत्यु।"** क्या प्रेम दुर्बलता है? नहीं। यदि प्रेम मनुष्य को दुर्बल करे, तो वह आसक्ति है; यदि प्रेम मनुष्य को ऊँचा उठाए, तो वह शक्ति है।

मारिया की स्मृति उसी क्षण उसके भीतर आई शांत, संयत, करुणामयी। वह स्वीकार कर चुका था कि उसके मन में उसके लिए कोमल स्थान है। पर वह यह भी जानता था कि वह अपने लक्ष्य से समझौता नहीं कर सकता। वह स्वयं से बोला "यदि मैं उससे सच में स्नेह करता हूँ, तो मुझे पहले स्वयं को योग्य बनाना होगा। प्रेम पाने से पहले स्वयं को सिद्ध करना होगा। "उसे विवेकानंद की वह शिक्षा याद आई — **"निस्वार्थता ही धर्म है। "माँ का प्रेम निस्वार्थ**

था। क्या उसका स्नेह भी वैसा हो सकता है? ऐसा जो अपेक्षा न रखे, केवल प्रेरणा दे। आरव ने गहरी साँस ली। उसे लगा, जीवन दो ध्रुवों का संघर्ष नहीं, एक साधना है, कर्तव्य और प्रेम की साधना। यदि जड़ें कर्तव्य में हों और हृदय प्रेम में, तो व्यक्तित्व संतुलित रहता है। **स्वामी जी ने आत्मबल पर इतना बल क्यों दिया? क्योंकि बाहरी परिस्थितियाँ मनुष्य को नहीं गिरातीं, भीतर की दुर्बलता गिराती है।**

उसने डायरी खोली और लिखा —

"मैं दुर्बल नहीं बनूँगा।
प्रेम मुझे विचलित नहीं करेगा; वह मुझे और संवेदनशील बनाएगा।
माँ का त्याग मेरी शक्ति है।
विवेकानंद के विचार मेरी दिशा हैं।
और मारिया मेरी प्रेरणा।"

उसे लगा कि उसके भीतर कोई स्पष्टता जन्म ले रही है। वह समझ रहा था कि सच्चा प्रेम अधिकार नहीं माँगता, वह प्रतीक्षा करता है। सच्चा लक्ष्य घबराहट नहीं पैदा करता, वह अनुशासन माँगता है। और सच्चा आध्यात्मिक विचार भागना नहीं सिखाता, बल्कि जीवन के बीच खड़े होकर कर्म करना सिखाता है।

स्वामी जी का वाक्य उसे याद आया — "निर्भीक बनो, समस्त शक्ति तुम्हारे भीतर है।"

क्या शक्ति बाहर से आती है? नहीं। शक्ति भीतर के विश्वास से आती है। उसने पुस्तक फिर उठाई। अब उसका मन स्थिर था। उसे लगा कि प्रेम और लक्ष्य विरोधी नहीं हैं। प्रेम हृदय को कोमल रखता है और लक्ष्य जीवन को दिशा देता है। दोनों मिलकर ही पूर्णता देते हैं। रात गहरी हो चुकी थी। बाहर ठंडी हवा बह रही थी, पर उसके भीतर एक अग्नि जागृत हो चुकी थी — आत्मविश्वास की, संकल्प की। उसने दीपक बुझाने से पहले मन ही मन प्रण किया —

"मैं अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटूँगा।
मैं अपने परिवार का विश्वास निभाऊँगा।

मैं अपने मन की कोमलता को भी जीवित रखूँगा।
और यदि मेरा स्नेह सत्य है, तो वह समय की परीक्षा में और उज्ज्वल होगा।"

बिस्तर पर लेटते समय उसके चेहरे पर हल्की शांति थी। सर्द रात लंबी थी, पर उसके भीतर एक उजाला था। उसे विश्वास था जो व्यक्ति आत्मबल, निस्वार्थ प्रेम और दृढ़ संकल्प को साथ लेकर चलता है, उसे कोई परीक्षा डिगा नहीं सकती।

भोर आएगी। और वह केवल एक नए दिन की भोर नहीं होगी, बल्कि एक ऐसे जीवन की, जहाँ कर्तव्य, प्रेम और आत्मबल एक साथ प्रवाहित होंगे।

अगली सुबह कॉलेज के प्रांगण में एक विलक्षण प्रभात अवतरित हुआ था। रात्रि का शीतल कुहासा अभी पूर्णतः विलीन नहीं हुआ था, मानो अँधेरे की अंतिम स्मृतियाँ अब भी वातावरण से लिपटी हुई हों। नवोदित सूर्य की स्वर्णाभ किरणें वृक्षों की पत्तियों पर मोतियों-सी ठहरी ओस-बूंदों को आलोकित कर रही थीं। मंद समीर में सरकती पत्तियों की ध्वनि किसी अदृश्य वीणा के मृदु आलाप-सी प्रतीत होती थी। वातावरण की शांति बाहरी नीरवता भर नहीं, बल्कि भीतर उठते आत्मसंवाद की साक्षी लग रही थी।

आरव अपने हाथों को सीने के समीप समेटे, धीमे और संयत क़दमों से प्रांगण में प्रवेश कर रहा था। उसकी चाल में संयम था, नेत्रों में गंभीरता, और मुखमंडल पर अध्ययन की रात्रियों का सूक्ष्म चिन्ह। पर आज उसके भीतर एक अदृश्य स्थिरता थी— मानो वह स्वयं से एक मौन व्रत लेकर आया हो। बीती रात्रि के आत्ममंथन ने उसके हृदय को स्पष्टता दी थी। उसने अपने भावों को स्वीकार कर लिया था, उन्हें दिशा दे दी थी।

उसी क्षण, पथ के दूसरे छोर से मारिया आती दिखाई दी। श्वेत दुपट्टा मंद वायु में लहराता हुआ, नेत्रों में प्रातःकालीन उजास, और मुख पर सहज प्रसन्नता। वह भी संभवतः अपने ही विचारों में निमग्न थी। दोनों की दृष्टियाँ अनायास मिलीं और समय जैसे एक क्षण के लिए ठहर गया।

वहाँ कोई बाह्य संवाद न था, न शब्दों का आदान-प्रदान; वह अंतर की भाषा थी। आरव के नेत्रों में आज संकोच नहीं, अपितु स्थिरता थी। मारिया ने उस स्थिरता को पहचाना उसमें आग्रह नहीं था, केवल सम्मान और स्वीकृति थी।

जैसे दोनों के भीतर जो संकल्प रात्रियों में जन्म ले चुके थे, वे आज प्रथम बार प्रकाश में आकर एक-दूसरे को संकेत दे रहे हों।

उनकी दृष्टियों ने कहा "हम लक्ष्य से विमुख नहीं होंगे।"
उनकी मौन मुस्कान ने जोड़ा "पर इस भावना से भी विमुख नहीं होंगे। "

मारिया ने हल्के से सिर झुकाया; वह अभिवादन था, पर उसके भीतर अनकही स्वीकृति भी थी। आरव ने भी प्रत्युत्तर में उतनी ही संयत नम्रता प्रकट की। उस क्षण दोनों समझ गए कि उनका स्नेह किसी अस्थिर तरंग का परिणाम नहीं, बल्कि दो सजग आत्माओं का सह-अस्तित्व है।

प्रांगण में खिले अशोक और अमलतास के वृक्ष जैसे इस मौन संधि के साक्षी बने खड़े थे। सूर्य की किरणें अब अधिक प्रखर हो चली थीं जैसे प्रकृति स्वयं कह रही हो कि भावनाएँ छिपाकर रखने की वस्तु नहीं, उन्हें शुद्ध और मर्यादित रूप में स्वीकार करना ही सत्य है।

आरव के भीतर स्वामी विवेकानंद के वचन पुनः गूँजे **"पवित्रता, धैर्य और दृढ़ता यही सफलता का मार्ग है।"** उसे प्रतीत हुआ कि यह मिलन कोई विचलन नहीं, अपितु उसके संकल्प की परीक्षा है। और आज वह इस परीक्षा में स्थिर था। प्रेम अब उसके लिए अस्थिरता नहीं, बल्कि प्रेरणा बन चुका था।

कुछ ही क्षणों में दोनों अपने-अपने मार्ग की ओर बढ़ चले पर आज की चाल भिन्न थी। यह दूरी अलगाव की नहीं, उद्देश्य की थी। वे साथ-साथ नहीं चल रहे थे, पर समान दिशा में अग्रसर थे।

उस शांत प्रभात में कॉलेज का प्रांगण केवल शैक्षणिक परिसर न था; वह दो मनों के परिपक्व होने का साक्षी बन गया था। वहाँ शब्द नहीं बोले गए, फिर भी बहुत कुछ कहा गया। आँखों ने प्रतिज्ञा की, मुस्कान ने विश्वास दिया, और मौन ने उस संबंध को वह गरिमा प्रदान की, जो शब्दों से कहीं अधिक दीर्घायु होती है।

कॉलेज के उसी गंभीर, सौम्य वातावरण में नंदिता का व्यक्तित्व एक विशिष्ट आभा की भाँति उपस्थित था। वह उन लोगों में से थी जिनका सौंदर्य प्रथम दृष्टि में चकाचौंध नहीं करता, पर धीरे-धीरे मन पर स्थायी छाप छोड़ जाता है। उसके व्यक्तित्व में एक शांत गरिमा थी जैसे पूर्णिमा का चंद्रमा, जो बिना शोर

के आकाश को आलोकित कर देता है। उसकी आँखें बड़ी और गहन थीं केवल रूपवती ही नहीं, विचारवती भी। उनमें एक सजग जिज्ञासा थी, मानो वह संसार को केवल देखती नहीं, परखती भी हो। जब वह सुनती, तो पूर्ण एकाग्रता से; और जब बोलती, तो शब्दों में संयम और अर्थ की स्पष्टता होती। उसके स्वर में मधुरता थी, पर वह दुर्बल नहीं उसमें आत्मविश्वास का सूक्ष्म कंपन था।

नंदिता का रूप सादगी में निहित था। हल्के रंगों के वस्त्र, बिना किसी आडंबर के; केश सधे हुए, दृष्टि स्थिर, चाल मृदुल किन्तु संतुलित। उसके मुख पर सदैव एक विचारशील शांति रहती जैसे वह भीतर ही भीतर किसी गहन संवाद में रत हो। वह अत्यधिक हँसी-ठिठोली में नहीं पड़ती थी, पर उसकी मुस्कान में आत्मीयता का स्पर्श अवश्य रहता। वह ऐसी मुस्कान थी जो किसी को आश्वस्त कर दे "तुम अकेले नहीं हो।"

परंतु नंदिता का वास्तविक सौंदर्य उसके मन में था। वह मित्रता को हल्के में नहीं लेती थी। उसके लिए संबंध क्षणिक आकर्षण नहीं, एक उत्तरदायित्व थे। वह परिस्थिति चाहे जैसी हो, अपने अध्ययन के प्रति समर्पित रहती। उसे देखकर प्रतीत होता कि उसके भीतर भी कोई मौन संघर्ष चलता है अपने सपनों और पारिवारिक अपेक्षाओं के मध्य संतुलन साधने का।

आरव जैसे अंतर्मुखी छात्र के लिए नंदिता का व्यक्तित्व किसी दर्पण के समान था। वह शब्दों में कम, पर समझ में अधिक विश्वास करती थी। कई बार जब कक्षा में चर्चा होती, तो नंदिता का तर्क स्थिर और स्पष्ट होता उसमें भावुकता नहीं, विचार की दृढ़ता होती। यही गुण उसे विशेष बनाता था। वह केवल सुंदर नहीं, सुबुद्धि थी। उसकी उपस्थिति में एक प्रकार की संतुलित ऊर्जा रहती न अति उत्साह, न अति मौन। वह जैसे अपने भीतर एक अनुशासित प्रकाश लेकर चलती हो। उसे देखकर यह अनुभूति होती कि सौंदर्य केवल चेहरे की रचना नहीं, व्यक्तित्व की संपूर्णता है विचार, व्यवहार, करुणा और आत्मसम्मान का सम्मिलित रूप।

यदि मारिया आरव के हृदय की कोमल प्रेरणा थी, तो नंदिता उसके बौद्धिक परिवेश का सुदृढ़ स्तंभ कही जा सकती थी। वह कथा में प्रतिस्पर्धा नहीं लाती, बल्कि वातावरण को संतुलन देती है यह स्मरण कराती हुई कि जीवन में भावनाएँ और बुद्धि दोनों आवश्यक हैं, और सच्ची गरिमा उसी में है जहाँ दोनों एक दूसरे का सम्मान करें।

नंदिता का सौंदर्य आँखों को आकर्षित कर सकता था, पर उसका चरित्र मन को स्थिर करता था। और यही स्थिरता उसे उस कथा के ताने-बाने में सहज रूप से प्रतिष्ठित करती है एक ऐसी सहपाठी, जो स्वयं भी स्वप्न देखती है, संघर्ष करती है, और अपने मौन दृढ़ संकल्प से दूसरों को प्रेरित करती है।

नंदिता और मारिया की मित्रता जितनी गहन थी, उतनी ही स्वच्छ भी। परंतु मनुष्य-हृदय की तरंगें कभी भी पूर्णतः समतल नहीं रहतीं – वे ईसीजी की रेखाओं की भाँति होती हैं, कभी-कभी वे अनायास ही हलचल से भर उठती हैं।

उस दिन पुस्तकालय का वातावरण अत्यंत नीरव था। ऊँची अलमारियों में सजी पुस्तकों की पंक्तियाँ, धूप की पतली किरणें खिड़कियों से छनकर आती हुईं, और बीच-बीच में पृष्ठ पलटने की मृदु ध्वनि। आरव एक संदर्भ-ग्रंथ के साथ बैठा था, मुख पर पूर्ववत् गंभीरता, दृष्टि में अध्ययन की तन्मयता। उसी समय नंदिता वहाँ आई। उसके हाथों में भी कुछ पुस्तकें थीं |

वह आरव के समीप बैठ गई। प्रारंभ में संवाद केवल विषयगत था परीक्षा की तैयारी, एक जटिल सिद्धांत की व्याख्या, और उत्तर-लेखन की पद्धति। नंदिता की वाणी स्थिर थी, विचार स्पष्ट। आरव ध्यान से सुन रहा था। कभी वह किसी बिंदु पर प्रश्न उठाता, तो नंदिता शांत तर्क से उत्तर देती। दोनों के बीच का यह संवाद बौद्धिक था, पर उसमें एक सुसंगत लय थी जैसे दो विचारशील मन किसी गंभीर विषय पर समान रुचि से चिंतन कर रहे हों। उसी क्षण, पुस्तकालय के दूसरे छोर से मारिया ने यह दृश्य देखा।

वह वहाँ किसी पुस्तक की खोज में आई थी, पर उसकी दृष्टि अनायास उस ओर ठहर गई। नंदिता और आरव दोनों एक ही मेज़ पर, समीप झुके हुए, एकाग्रता से कुछ समझाते-सुनते हुए। दृश्य स्वाभाविक था, सहज भी। पर मारिया के भीतर एक अनाम कंपन उठ खड़ा हुआ। उसके मन ने पहले तर्क किया — "वे केवल अध्ययन कर रहे हैं। "पर हृदय ने धीमे से पूछा "केवल अध्ययन?"

उसने स्वयं को संयत रखने का प्रयास किया। उसने अनुभव किया कि यह भावना कोई ईर्ष्या का तीखा शूल नहीं, अपितु एक सूक्ष्म अस्थिरता है जैसे अपने अधिकार की नहीं, अपितु अपने स्थान की चिंता।

उसे स्मरण हुआ वह प्रातःकालीन मिलन, वह मौन प्रतिज्ञा। क्या वह सब केवल उसकी कल्पना थी? या यह दृश्य उसी प्रतिज्ञा की परीक्षा? मारिया के भीतर द्वंद्व चलने लगा। वह जानती थी कि नंदिता उसकी अत्यंत प्रिय सखी है उसकी संवेदना की सहभागी। और आरव वह उसके हृदय की वह कोमल दिशा, जिसे उसने अभी-अभी स्वीकारना सीखा था। इन दोनों के एक साथ होने का दृश्य स्वाभाविक था; फिर भी मनुष्य का **मन कभी-कभी तर्क से अधिक भाव से संचालित होता है।**

उसने अनुभव किया कि प्रेम केवल सुख नहीं देता; वह असुरक्षा का सूक्ष्म अनुभव भी कराता है। यह असुरक्षा स्वार्थ से नहीं, गहराई से जन्म लेती है। जहाँ हृदय जुड़ता है, वहाँ उसका स्पंदन तीव्र हो जाता है। वह स्वयं को समझाने लगी "यदि मेरा स्नेह सच्चा है, तो उसमें विश्वास होना चाहिए। " पर भीतर की हलचल इतनी सरलता से शांत न हुई। पुस्तकालय की उस शांत वायु में उसे अपने ही हृदय की धड़कन तीव्र प्रतीत होने लगी। उसने कुछ क्षण तक उन्हें देखा आरव की दृष्टि अब भी विचार में निमग्न थी, नंदिता के मुख पर तर्क की गंभीरता। वहाँ कोई चंचलता नहीं थी, केवल अध्ययन। यह देखकर भी मारिया का मन पूर्णतः निश्चिंत न हो सका। वह धीरे से मुड़ी और पुस्तकालय के एक अन्य कोने में चली गई। पुस्तक खोलकर बैठी, पर अक्षर धुँधले लगने लगे। उसने अनुभव किया यह भावना स्वाभाविक है, पर उसे अपने भीतर ही सुलझाना होगा। प्रेम का मार्ग केवल बाह्य संबंधों का नहीं, आत्म-विकास का भी होता है। यदि वह इस सूक्ष्म व्याकुलता को समझ ले, तो उसका स्नेह और परिपक्व होगा।

कुछ देर पश्चात उसने स्वयं से प्रश्न किया "क्या मुझे अपने विश्वास पर संदेह है? या स्वयं पर? " यह प्रश्न उसे भीतर तक छू गया। उसे स्मरण आया कि आरव का व्यक्तित्व स्थिर और गंभीर है, और नंदिता की मित्रता पारदर्शी। तब यह उद्विग्नता किस कारण? उत्तर धीरे-धीरे स्पष्ट हुआ यह उसकी अपनी संवेदनशीलता थी, जो प्रेम के प्रथम स्पर्श में स्वाभाविक रूप से चंचल हो उठी थी। उसने गहरी श्वास ली। उसे लगा, सच्चा स्नेह किसी को बाँधता नहीं; वह स्वतंत्रता में ही सुरक्षित रहता है। उधर नंदिता और आरव का संवाद समाप्त हुआ। दोनों ने औपचारिक मुस्कान के साथ पुस्तकों को समेटा और अपने-अपने मार्ग चले गए। उस दृश्य में कुछ भी असाधारण नहीं था पर मारिया के

हृदय में जो तरंग उठी थी, वह उसके लिए एक गहन अनुभव बन चुकी थी। उस दिन उसने समझा कि प्रेम का सौंदर्य केवल मिलन में नहीं, अपितु उस विश्वास में है जो भीतर जन्म लेता है। और यह विश्वास बाहरी दृश्यों से नहीं, भीतर की दृढ़ता से पुष्ट होता है। उसकी व्याकुलता स्वाभाविक थी पर वही व्याकुलता उसे आत्मबोध की ओर भी ले जा रही थी।

पुस्तकालय के उस कोने में बैठी मारिया ने जब अपने भीतर उठती सूक्ष्म वेदना को ध्यान से परखा, तो उसे अनुभव हुआ कि यह पीड़ा किसी बाहरी घटना से अधिक उसके अपने अंतर्मन की प्रतिछाया है। नंदिता और आरव का संवाद स्वाभाविक था ज्ञान की भूमि पर आधारित, उद्देश्य से प्रेरित। उसमें कोई गोपनीयता नहीं थी। फिर भी उसके हृदय में जो हलचल उठी, वह यह सिखाने आई थी कि प्रेम केवल आनंद नहीं, आत्म-परीक्षा भी है।

उसने धीरे-धीरे आँखें मूँद लीं। भीतर से एक स्वर आया "जिसे तुम प्रेम कहती हो, क्या वह विश्वास से जन्मा है या भय से? " यह प्रश्न साधारण न था। उसे लगा, प्रेम यदि भय से संचालित हो, तो वह बंधन बन जाता है; पर यदि वह विश्वास से पोषित हो, तो वह विस्तार देता है।

नंदिता उसकी सखी थी वह सखी जिसने अनगिनत रात्रियों में उसके स्वप्न सुने थे, उसकी आशंकाएँ बाँटी थीं। क्या वह उसी नंदिता पर संशय कर सकती है? और आरव जिसकी दृष्टि में उसने संयम और सत्य का भाव देखा था क्या वह इतना क्षीण हो सकता है कि परिस्थितियों से डगमगा जाए?

उसे स्मरण हुआ सच्चा स्नेह किसी को अपने अधिकार में रखने का आग्रह नहीं करता। वह तो उस व्यक्ति को उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व सहित स्वीकारता है। यदि प्रेम में विश्वास न हो, तो वह केवल आकर्षण है। और यदि विश्वास हो, तो वह तप है जो संदेह की अग्नि में भी स्वयं को शुद्ध कर लेता है।

उसने विचार किया "क्या मैं नंदिता से स्वयं की तुलना कर रही हूँ? " तुलना का भाव ही मन में विष घोलता है। प्रत्येक व्यक्तित्व अपनी विशिष्ट छाया लिए होता है। नंदिता का सौंदर्य उसका संतुलन है, उसकी बुद्धि है। और मेरे भीतर जो कोमलता है, वह मेरी अपनी पहचान है। प्रेम प्रतिस्पर्धा नहीं चाहता; वह सह-अस्तित्व चाहता है। यदि दो दीपक साथ जलें, तो प्रकाश घटता नहीं, बढ़ता है।

धीरे-धीरे मारिया के हृदय में एक नई स्पष्टता उतरने लगी। उसे लगा कि विश्वास केवल दूसरे पर नहीं, स्वयं पर भी होना चाहिए। यदि वह अपने स्नेह की पवित्रता पर आश्वस्त है, तो उसे भय कैसा? प्रेम का सत्य यह है कि वह किसी को खोने की चिंता में नहीं जीता; वह स्वयं को इतना विकसित करता है कि उसका आकर्षण बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर न रहे।

उसने मन ही मन स्वीकार किया "मैं नंदिता से ईर्ष्या नहीं करूँगी, क्योंकि वह मेरी सखी है। मैं आरव पर संशय नहीं करूँगी, क्योंकि मेरे विश्वास का आधार उसका चरित्र है। और मैं स्वयं पर भी संदेह नहीं करूँगी, क्योंकि मेरा प्रेम स्वच्छ है। "उस क्षण उसे प्रतीत हुआ कि यह छोटी-सी व्याकुलता उसे परिपक्व बनाने आई थी। जैसे स्वर्ण अग्नि में तपकर और दीप्त हो उठता है, वैसे ही स्नेह भी संदेह की हल्की आंच से अधिक शुद्ध हो सकता है यदि उसमें सत्य हो।

उसने पुस्तक बंद की, एक गहरी श्वास ली। अब अक्षर स्पष्ट दिखने लगे थे। भीतर का कुहासा कुछ हल्का हो चुका था। उसने अनुभव किया कि प्रेम का अर्थ किसी को बाँध लेना नहीं, बल्कि उसके स्वतंत्र अस्तित्व का सम्मान करना है। और जब सम्मान और विश्वास साथ हों, तो कोई तीसरा व्यक्ति उस बंधन को विचलित नहीं कर सकता।

उसके अधरों पर धीमी मुस्कान आई अब वह मुस्कान उद्विग्नता की नहीं, आत्मबोध की थी। उसे लगा कि आज उसने केवल एक पुस्तक नहीं पढ़ी; उसने अपने ही हृदय का एक नया अध्याय पढ़ लिया है।

समय ने बीते हुए इन वर्षों में बहुत कुछ बदल दिया था। कॉलेज के गलियारों की साझा आहट अब दो अलग दिशाओं में विभाजित हो चुकी थी।

समय, जो कभी पलाश-वृक्ष के नीचे ठिठका-सा प्रतीत होता था, अब तीव्र गति से अग्रसर हो चुका था। आरव और मारिया चिकित्सा-शिक्षा के अंतिम वर्ष में प्रवेश कर चुके थे। वही विशाल प्रांगण, वही श्वेत-दीवारों वाली इमारतें, वही गलियारे पर अब उनका अर्थ परिवर्तित हो गया था। जहाँ पूर्व में कौतूहल था, वहाँ अब उत्तरदायित्व की गंभीर छाया थी; जहाँ विस्मय था, वहाँ अब आत्मसंयत दृढ़ता।

अंतिम वर्ष केवल पाठ्यक्रम का समापन नहीं होता; वह साधना का चरम चरण होता है। मेडिसिन, सर्जरी, स्त्रीरोग एवं प्रसूति-शास्त्र, बालरोग, अस्थि-विज्ञान

प्रत्येक विषय अब पृथक अध्याय न रहकर जीवन के विविध आयाम बन चुके थे।

सन्ध्या ढलते ही छात्रावास के कक्षों में दीपक देर तक प्रकाश देने लगते। बाहर का आकाश क्रमशः अन्धकार में डूबता, पर भीतर ज्ञान की ज्योति अधिक स्थिर और एकाग्र होती जाती। पुस्तकों के विस्तृत पृष्ठों पर झुकी दृष्टियाँ, बिखरे हुए नोट्स, चिन्हित अनुच्छेद सब मिलकर ऐसा आभास देते मानो प्रत्येक कक्ष एक लघु तपोवन हो, जहाँ परिश्रम आहुति बनकर समर्पित हो रहा हो।

कहीं हृदय-रोगों की जटिल व्याख्या खुली रहती; कहीं शल्य-प्रक्रियाओं की सूक्ष्म संरचना का विश्लेषण; कहीं प्रसूति-गृह की आकस्मिक जटिलताओं का विस्तार। दीपक की स्थिर लौ के सामने बैठा छात्र केवल परीक्षा की तैयारी नहीं कर रहा होता वह स्वयं को उत्तरदायित्व के योग्य बना रहा होता है।

आरव का स्वभाव और अधिक संयत हो गया था। उसने समय को कठोर अनुशासन में बाँध लिया था — प्रातःकालीन वार्ड-राउंड, मध्याह्न क्लिनिकल चर्चा, सन्ध्याकाल पुस्तकालय की निस्तब्धता, और पुनः स्वाध्याय। उसकी आँखों के नीचे थकान की हल्की रेखाएँ उभर आई थीं, पर उनमें दृढ़ता का प्रकाश और अधिक गहरा हो गया था।

मारिया भी उसी ज्योतिर्मय साधना में लीन थी। पर उसके अध्ययन का स्वर भिन्न था। वह केवल रोग के लक्षण याद नहीं करती; रोगी का चेहरा भी स्मरण रखती। केस-शीट के पीछे उसे वह वृद्ध दिखाई देता, जिसने काँपते हाथों से धन्यवाद दिया था; वह प्रसूता स्त्री, जिसकी आँखों में वेदना और विश्वास एक साथ थरथरा रहे थे। उनकी चर्चाएँ अब पूर्ववत् हल्की न रहीं। उनमें गहराई थी।

"आज वार्ड में जो मायोकार्डियल इन्फार्क्शन का केस था," आरव गंभीरता से कहता, "उसकी दवा नियमित न लेने से स्थिति बिगड़ी। " मारिया प्रत्युत्तर देती "दवा की अनुपलब्धता भी एक रोग है। चिकित्सा केवल शरीर का नहीं, व्यवस्था का भी उपचार माँगती है। " परीक्षा समीप आती गई। प्रांगण का वातावरण बदल गया। सहज हास्य के स्थान पर अब गंभीर विमर्श था। पुस्तकालय की निस्तब्धता और अधिक गाढ़ी हो गई थी जैसे प्रत्येक पृष्ठ के पलटने की ध्वनि भी श्रव्य हो।

कभी-कभी, थकान के क्षणों में, वे पलाश-वृक्ष के नीचे जाकर बैठते। अब वह वृक्ष पुनः हरित हो चुका था; रक्तिम पुष्प झर चुके थे। पर उसका तना स्थिर था जैसे स्मरण दिला रहा हो कि प्रत्येक दाह के पश्चात् पुनः जीवन लौटता है।

एक दीर्घ स्वाध्याय के उपरान्त मारिया ने मृदु स्वर में पूछा "आरव, क्या तुम्हें कभी संकोच नहीं होता? इतनी व्यापक चिकित्सा-भूमि कहीं हम कुछ भूल न जाएँ? "आरव ने पुस्तक धीरे से बंद कर दी।

"संकोच होता है," उसने स्वीकार किया, "पर वही हमें सजग रखता है। यह परीक्षा केवल अंकों की नहीं हमारी योग्यता की परीक्षा है। "मारिया ने शांत मुस्कान के साथ कहा "और धैर्य की भी। "

परीक्षाओं का काल उपस्थित हुआ। प्रायोगिक परीक्षा में कठोर परीक्षक, तीव्र प्रश्न, जटिल क्लिनिकल केस जहाँ केवल स्मृति पर्याप्त न थी, वहाँ विवेक और आत्मविश्वास की आवश्यकता थी। वाइवा-टेबल के सामने खड़े होकर उन्हें लगा मानो वर्षों का परिश्रम एक क्षण में परखा जा रहा हो।

पर वही वर्षों का अनुशासित अभ्यास अब उनके उत्तरों में स्पष्ट था। आरव ने स्थिर स्वर में निदान का क्रम स्पष्ट किया; मारिया ने उपचार-योजना को सम्यक तर्क सहित प्रस्तुत किया। लिखित परीक्षा के पश्चात् एक गहरी शिथिलता ने उन्हें घेर लिया मानो लंबी यात्रा का एक पड़ाव पूर्ण हुआ हो।

परिणाम घोषित होने के दिन सूचना-पट्ट के समक्ष विद्यार्थियों की भीड़ उमड़ आई। धड़कनों की गति तीव्र थी। जब सूची में आरव और मारिया के नाम श्रेष्ठ अंकों के साथ प्रकाशित हुए, तो दोनों के भीतर एक साथ राहत और विनम्र कृतज्ञता उमड़ पड़ी।

"**हमने पार कर लिया,** मारिया ने धीमे स्वर में आरव के गालों के पास आकर फुसफुसाते हुए कहा। उसकी आँखों में एक अजीब-सी चमक थी जैसे उसके होंठ तो परिणाम के बारे में बोल रहे थे, लेकिन आँखें कुछ और ही बयान करना चाहती थीं।"

आरव ने गंभीर दृष्टि से कहा "यह एक सोपान है, शिखर नहीं।"

* * *

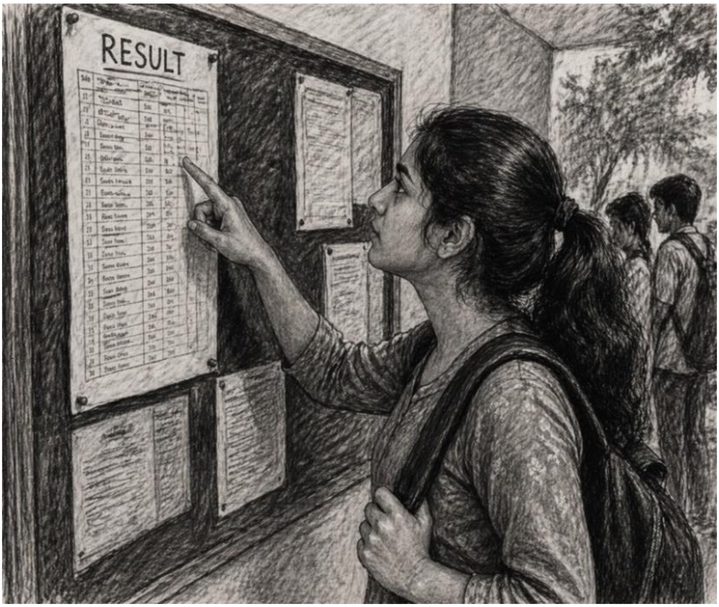
RESULT

चिकित्सा-शिक्षा का पथ स्नातक उपाधि पर समाप्त नहीं होता। वरिष्ठों ने स्पष्ट कहा "यदि विशेषज्ञता चाहते हो, यदि ज्ञान के गहन आयामों तक पहुँचना चाहते हो, तो स्नातकोत्तर परीक्षा की तैयारी अनिवार्य है। यह और अधिक कठिन है, और प्रतिस्पर्धा कहीं तीव्र। "एक बार पुनः पुस्तकों का पर्वत उनके सम्मुख था पर अब लक्ष्य और अधिक स्पष्ट था।

कॉलेज का वही कोना जहाँ खिड़की के पास से पेड़ों की हरियाली दिखाई देती थी। और वहीं खिड़की के पास शांत खड़ी थी नंदिता।

तभी उसके कानों में एक परिचित स्वर जैसे अचानक गूँज उठा —

"Nandita Banerjee – Distinction."

वह चौंककर पीछे मुड़ी।

उसकी आँखों के सामने आरव खड़ा था।

उसकी आँखों में वही उजली चमक थी जैसे किसी ने अभी-अभी कोई सुखद रहस्य खोज लिया हो।

आरव हल्की मुस्कान के साथ बोला "डॉ. नंदिता डिस्टिंक्शन।"

उसके स्वर में एक स्नेहमय गर्व था। नंदिता के होंठों पर एक धीमी मुस्कान उतर आई।

पर उसकी आँखों में अचानक एक हल्की नमी भी झिलमिला उठी,जैसे वर्षों की मेहनत एक ही क्षण में पिघलकर भाव बन गई हो। उसने धीमे स्वर में पूछा "सच? "आरव ने सूची की ओर इशारा किया।

"खुद देख लो लेकिन हाँ, अब तो तुम्हें *डॉक्टर* कहना पड़ेगा। "नंदिता ने कागज़ पर अपनी पंक्ति को फिर से देखा। वह सच था।

भीड़ की आवाजें दूर से आ रही थीं, पर उनके बीच एक अलग-सी निस्तब्धता उतर आई थी।

नंदिता ने धीरे से कहा "आरव अगर इन पाँच सालों में तुम जैसे दोस्त न मिले होते तो शायद यह रास्ता इतना आसान नहीं होता। "आरव ने तुरंत कहा"और अगर तुम न होतीं तो शायद मैं आधी किताबें भी नहीं पढ़ पाता। "नंदिता हल्के

से मुस्कुरा दी। फिर उसने धीमे स्वर में कहा "जीवन में कुछ लोग ऐसे मिलते हैं जो हमारे रास्ते नहीं बदलते पर हमारी यात्रा को अर्थ दे देते हैं।"

आरव ने उसकी ओर देखा। उसके शब्दों में एक गहरा भाव था — जैसे कोई कोमल सत्य धीरे-धीरे खुल रहा हो। नंदिता ने अपनी दृष्टि झुका ली। उसके स्वर में हल्की कंपन थी "तुम उन्हीं लोगों में से हो।"

हवा का एक झोंका आया। नोटिस बोर्ड पर लगा कागज़ हल्का-सा काँप उठा।

भीड़ की आवाजें अब और दूर चली गई थीं। कॉलेज का वह कोना, जहाँ वे दोनों खड़े थे, जैसे अचानक किसी शांत द्वीप में बदल गया था। आरव कुछ क्षण नंदिता को देखता रहा।

उसके चेहरे पर वही शांत मुस्कान थी, पर उसकी आँखों की गहराई में जैसे कोई अनकहा भाव ठहरा हुआ था। आरव ने हल्के स्वर में कहा "तुम हमेशा ऐसी ही बातें क्यों करती हो जैसे कोई कविता बोल रही हो? "नंदिता ने धीरे से उसकी ओर देखा।

उसकी आँखों में एक कोमल चमक थी। "शायद इसलिए कि कुछ भाव सीधे शब्दों में कहे नहीं जा सकते। "आरव मुस्कुरा दिया। "और मैं हमेशा उन्हें समझ नहीं पाता। "नंदिता भी हल्के से मुस्कुरा दी। "समझना जरूरी भी नहीं होता, आरव!

कभी-कभी बस उन्हें महसूस करना ही काफी होता है। "क्षण भर दोनों चुप रहे।

कॉलेज के पेड़ों के बीच से आती हवा में पत्तियाँ सरसराने लगीं। धूप अब हल्की हो चली थी और बरामदे की फर्श पर पेड़ों की छायाएँ लंबी होने लगी थीं। नंदिता ने धीरे से कहा "आज अजीब-सा लग रहा है।" "क्यों?" आरव ने पूछा। "क्योंकि आज के बाद शायद हम यहाँ इस तरह साथ नहीं खड़े होंगे।"

आरव ने हल्की हँसी के साथ कहा"इतनी जल्दी भावुक मत हो जाओ। दुनिया इतनी छोटी भी नहीं है कि हम फिर कभी मिल न सकें। "नंदिता ने सिर हिलाया। "मिलना और साथ चलना दोनों अलग बातें हैं। "आरव कुछ क्षण उसे

देखता रहा। फिर उसने हल्के स्वर में कहा"लेकिन जो दोस्ती पाँच साल में बनी है वह इतनी आसानी से खत्म नहीं होती। "

नंदिता की आँखों में एक हल्की चमक उभरी। "हाँ कुछ रिश्ते खत्म नहीं होते।"

उसने धीरे से नोटिस बोर्ड की ओर देखा, जहाँ अभी भी उनका परिणाम चिपका हुआ था।

"वे बस रूप बदल लेते हैं। "आरव ने हल्के आश्चर्य से पूछा"रूप बदल लेते हैं? "नंदिता ने मुस्कुराकर कहा"जैसे नदी जो पहाड़ों में एक छोटी-सी धारा होती है,फिर मैदानों में पहुँचकर एक बड़ी नदी बन जाती है। ""लेकिन उसका स्रोत वही रहता है। "आरव कुछ क्षण चुप रहा।

उसे लगा जैसे नंदिता की हर बात के भीतर कोई गहरा अर्थ छिपा है। लेकिन वह उसे पूरी तरह पकड़ नहीं पा रहा था। नंदिता ने धीरे से कहा"आरव... एक बात कहूँ? "

"हाँ?" उसने क्षण भर के लिए उसकी आँखों में देखा। "जो भी रास्ते आगे आएँ...तुम वैसे ही रहना जैसे अभी हो।" "क्योंकि दुनिया को अच्छे डॉक्टरों से ज्यादा अच्छे इंसानों की जरूरत होती है। "

आज उसने पहली बार स्पष्ट देखा था मारिया की आँखों में आरव के लिए वही चमक थी, जो कभी उसके अपने मन में अनजाने ही जन्म ले चुकी थी। जब मारिया के होंठ आरव के गालों के पास कुछ कहने के लिए झुके थे, वह क्षण साधारण नहीं था; उसमें एक अनकही निकटता थी, एक ऐसा भाव जो शब्दों से कहीं अधिक गहरा था। स्पष्ट था कि मारिया केवल कुछ कहने के लिए नहीं झुकी थी... उस झुकाव में एक सूक्ष्म स्नेह, एक गहन भाव छिपा था — मानो शब्द तो केवल एक बहाना हों, असली बात उस नज़दीकी में ही व्यक्त व हो रहा हो, वह क्षण छोटा था, पर सत्य बहुत स्पष्ट।

उसने हल्की-सी मुस्कान ओढ़ ली एक ऐसी मुस्कान, जो सिर्फ होंठों तक सीमित थी। आँखें अब भी शांत थीं — किन्तु उसी शांति की सतह पर एक हल्की-सी नमी तैर रही थी| वह नमी केवल आँसुओं की नहीं थी वह उन भावनाओं की थी, जिन्हें उसने अब तक शब्द नहीं दिए थे, जिन्हें वह स्वयं भी

पूरी तरह समझ नहीं पाई थी। एक मौन स्वीकार, एक हल्की-सी कसक, और कहीं भीतर बहुत गहराई में एक कोमल-सा टूटना, जो बाहर आने से पहले ही ठहर गया था।

लेकिन उस टूटन में पीड़ा कम थी, एक गहरी समझ अधिक थी। उसने मन ही मन कहा *तो यह है सत्य* आरव और मारिया। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। आज उसे समझ आ गया **जीवन की राहें हमेशा समानांतर नहीं होतीं।** कभी-कभी वे अलग दिशाओं में मुड़ जाती हैं। और शायद यही स्वाभाविक है।

उसने धीरे से आकाश की ओर देखा। बादलों के पीछे डूबता सूर्य जैसे एक मौन संकेत दे रहा था —

हर प्रकाश को एक दिन क्षितिज के पार जाना ही होता है। नंदिता के मन में एक हल्का प्रश्न उठा —

क्या मुझे दुख है? उसने स्वयं से ईमानदारी से पूछा। उत्तर तुरंत नहीं आया। कुछ क्षणों बाद उसने महसूस किया हाँ, कहीं बहुत गहराई में एक पीड़ा है। पर उससे भी गहरी एक भावना है **मारिया के लिए स्नेह।**

मारिया सरल थी, सच्ची थी। उसकी आँखों में छल नहीं था। और शायद यही कारण था कि नंदिता उससे नाराज़ भी नहीं हो सकती थी। उसने सोचा *यदि मारिया आरव को सच में खुश रख सकती है... तो क्या मुझे उनके बीच खड़ा होना चाहिए?* उत्तर उसके भीतर बहुत स्पष्ट **था। नहीं। प्रेम यदि सच में प्रेम है तो वह किसी को बाँधता नहीं। वह मुक्त करता है।**

नंदिता के होंठों पर हल्की, शांत मुस्कान आ गई। उसने मन ही मन स्वीकार कर लिया *आरव शायद कभी नहीं जान पाएगा* कि उसके जीवन की यात्रा में एक ऐसा भी हृदय था जिसने उसे चुपचाप चाहा था। और शायद यह ठीक भी है। क्योंकि यदि आरव जान जाता तो शायद उसके मन में अपराधबोध आ जाता। और नंदिता नहीं चाहती थी कि उसका प्रेम किसी के लिए बोझ बन जाए। नंदिता ने गहरी साँस ली। उस क्षण उसने एक निर्णय लिया वह धीरे-धीरे दूरी बना लेगी। न कोई शिकायत,न कोई संकेत। बस एक शांत पीछे हट

जाना। ताकि वह मारिया और आरव के बीच कोई छाया न बनकर रह जाए। उसके मन में एक अंतिम विचार उभरा|

शायद एक दिन...

जब जीवन बहुत आगे निकल जाएगा, तब आरव कभी पल भर के लिए यह सोचे कि नंदिता इतनी चुप क्यों रहती थी। पर उस प्रश्न का उत्तरउसे शायद कभी न मिले। और यही ठीक है। क्योंकि कुछ त्याग कह देने से छोटे हो जाते हैं। वे तभी पवित्र रहते हैं जब वे मौन में छिपे रहें।

हवा का एक झोंका फिर आया। नोटिस बोर्ड पर लगा कागज़ हल्के से फड़फड़ाया, और धूप की एक किरण उस पर पड़ते ही अक्षर जैसे अचानक चमक उठे। क्षण भर के लिए नंदिता की दृष्टि फिर उसी पंक्ति पर टिक गई—

“Nandita Banerjee– Distinction.”

उसे लगा जैसे ये शब्द केवल कागज़ पर नहीं, उसके पाँच वर्षों के संघर्ष, जागी हुई रातों और अनगिनत सपनों की कहानी बनकर चमक रहे हों। हवा थम गई, पर वह पंक्ति अभी भी धूप में हल्की-सी चमक रही थी मानो समय स्वयं उस क्षण को कुछ देर और ठहर कर देखना चाहता हो।

नंदिता का त्याग केवल एक व्यक्तिगत भावनात्मक निर्णय नहीं था; वह उस गहरी सांस्कृतिक चेतना का प्रतिरूप था जो भारतीय दर्शन की आत्मा में सदियों से प्रवाहित होती रही है। भारतीय परंपरा में कहा गया है कि मनुष्य का सबसे बड़ा संघर्ष बाहरी संसार से नहीं, अपने ही भीतर से होता है। इच्छा और करुणा, अधिकार और करुणा, प्रेम और त्याग इनके बीच जो सूक्ष्म संतुलन है, वही व्यक्ति के चरित्र को निर्मित करता है। नंदिता के भीतर भी यही द्वंद्व उठा था।

भारतीय दार्शनिक परंपरा इस प्रश्न का उत्तर बहुत पहले दे चुकी है। यहाँ प्रेम को **ममता का विस्तार** नहीं, बल्कि **अहंकार के विसर्जन** के रूप में देखा गया है। जब व्यक्ति अपने अधिकार-बोध से मुक्त होकर किसी और के सुख को स्वीकार करता है, तभी प्रेम अपनी शुद्धतम अवस्था में पहुँचता है।

नंदिता का मौन इसी सत्य की ओर संकेत करता है। उसने अपने भाव को न तो आरोपित किया, न व्यक्त करके किसी पर भार बनाया। उसने केवल उसे अपने भीतर एक शांत दीपक की तरह जलने दिया। यह त्याग पलायन नहीं था; यह एक गहरी आत्मिक परिपक्वता का निर्णय था। **यही वह बिंदु है जहाँ कालिदास की काव्यात्मक दृष्टि और बुद्ध का करुणामय दर्शन एक ही सत्य की ओर संकेत करते हुए दिखाई देते हैं कि प्रेम का सर्वोच्च रूप वह है जिसमें व्यक्ति स्वयं से ऊपर उठकर दूसरे के सुख को प्राथमिकता देता है।**

* * *

NEET-PG का डेट आ गया था। मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल में उस दिन एक अजीब-सी हलचल थी। किसी के चेहरे पर उत्साह था, किसी की आँखों में चिंता, और किसी के मन में एक अनकहा डर। यह केवल एक परीक्षा की तारीख नहीं थी यह वह क्षण था जब हजारों सपनों की दिशा तय होने वाली थी।

मेडिकल छात्रों के लिए NEET-PG जीवन की सबसे बड़ी परीक्षाओं में से एक मानी जाती है। कई वर्षों की पढ़ाई, इंटर्नशिप की कठिन ड्यूटी, अनगिनत रातों की नींद और परिवार की उम्मीदें सब कुछ अब इसी एक लक्ष्य पर टिक गया था। नंदिता, आरव और मारिया भी उसी भीड़ का हिस्सा थे।

MBBS के **34 विषयों** का विशाल सिलेबस उनके सामने था। हर दिन सुबह की शुरुआत किताबों के साथ होती और रात का अंत भी नोट्स और रिवीजन के साथ। लाइब्रेरी के शांत कोनों में बैठे छात्र अपने-अपने सपनों के लिए लड़ रहे थे। हर कोई चाहता था कि उसे अपना मनपसंद क्लिनिकल सब्जेक्ट मिले— जैसे **General Medicine, General Surgery, Radiology** या **Pediatrics।**

नंदिता अक्सर लाइब्रेरी के एक शांत कोने में बैठकर पढ़ती थी। उसके सामने किताबें खुली होती थीं, पर कभी-कभी उसका मन भटक जाता था। वह जानती थी कि यह परीक्षा उसके करियर के लिए कितनी महत्वपूर्ण है, पर उसके भीतर चल रहे भावनात्मक द्वंद्व को वह किसी से कह नहीं पाती थी।

आरव अपने स्वभाव के अनुसार पूरी ऊर्जा के साथ तैयारी में लगा हुआ था। उसके लिए यह परीक्षा अपने सपनों को सच करने का रास्ता थी। वहीं मारिया भी उतनी ही गंभीरता से पढ़ाई में डूबी हुई थी। उनके बीच की नज़दीकियाँ धीरे-धीरे अपनी सीमाएँ बदल रही थीं वह अनकहा आकर्षण, जो पहली बार अंतिम वर्ष के परिणाम के दिन, क्षण भर के लिए प्रकट हुआ था अब कहीं अधिक स्पष्ट, कहीं अधिक गहरा हो चला था। अब उनके बीच शब्दों की आवश्यकता कम होती जा रही थी। दूरी जैसे केवल औपचारिक रह गई थी वास्तव में वे एक-दूसरे के इतने पास आ चुके थे कि हर बात कहने के लिए आवाज़ नहीं, बस एक हल्का-सा झुकाव, एक ठहरती हुई साँस, या एक क्षण

की निकटता ही पर्याप्त थी। कभी उनके चेहरे इतने करीब आ जाते कि लगता, हवा भी उनके बीच ठहर गई है|

नंदिता यह सब कभी-कभी चुपचाप देख लिया करती थी – मानो अनजाने में उसकी दृष्टि उस ओर ठहर जाती हो, और फिर बिना किसी हलचल के लौट भी आती हो।

उसके अधरों तक न कोई प्रश्न आता, न ही प्रतिक्रिया बस एक शांत, संयत निहार, जो देखता तो सब था, पर स्वयं को उससे अलग ही रखता था। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं ठहरता था – जैसे भीतर उठने वाली हर अनुभूति अब मौन में ही विलीन हो जाना सीख चुकी हो|

हॉस्टल के कमरे अब केवल रहने की जगह नहीं रह गए थे; वे छोटे-छोटे अध्ययन कक्ष बन चुके थे। टेबल पर फैली किताबें, दीवारों पर लगे चार्ट, और कॉफी के कप सब इस बात के साक्षी थे कि यहाँ कोई अपने भविष्य के लिए दिन-रात मेहनत कर रहा है। पूरे एक वर्ष की तैयारी, अनगिनत मॉक टेस्ट और लगातार रिवीजन के बाद सब कुछ अंततः **तीन घंटे की परीक्षा** में तय होने वाला था।
तीन घंटे...

जो यह तय करेंगे कि किसे कौन-सा विषय मिलेगा, किसे कौन-सा कॉलेज मिलेगा, और आगे उसकी जिंदगी किस दिशा में बढ़ेगी।

सन्ध्या की मृदु आभा में आरव और मारिया पुनः पलाश-वृक्ष के समीप खड़े थे। आरव ने कहा "चिकित्सा का मार्ग इसी वृक्ष की भाँति है पहले दाह, फिर परीक्षा, और फिर पुनः नव-संकल्प। "मारिया ने उत्तर दिया "और हर चरण पर हमें अपने भीतर कुछ त्यागना होगा आलस्य, भय, और अहं। "उनकी आँखों में थकान थी, पर निराशा नहीं। उन्होंने अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी; पर अब जीवन की दीर्घ साधना उनका आह्वान कर रही थी। वे समझ चुके थे चिकित्सक होना एक पदवी नहीं, एक सतत तप है। और इस तप में उनका प्रेम अब केवल भाव-आवेग न था; वह परस्पर संकल्प को दृढ़ रखने वाली अंतर्ज्योति बन चुका था।

एम.बी.बी.एस. के बाद का वर्ष उनके जीवन का सबसे अनुशासित और सबसे अस्थिर वर्ष था। नीट-पीजी केवल एक परीक्षा नहीं थी; वह लाखों सपनों की भीड़ में स्वयं को सिद्ध करने की चुनौती थी।

मारिया ने शुरुआत से योजना बनाई। महीनों में सिलेबस बाँटा। सुबह सिद्धांत, दोपहर में एमसीक्यू, शाम को त्रुटियों की समीक्षा। उसने एक छोटी "रेड फ्लैग" कॉपी बनाई केवल वे तथ्य जो बार-बार फिसल जाते थे: दवाओं की डोज़, क्लासिकल साइन, क्राइसिस मैनेजमेंट के बिंदु।

आरव ने अलग मार्ग चुना। उसने एक "गलतियों की डायरी" बनाई। हर मॉक टेस्ट के बाद वह केवल स्कोर नहीं देखता, बल्कि यह लिखता गलती क्यों हुई? ज्ञान की कमी, जल्दबाज़ी, या प्रश्न की भाषा?

परीक्षा से ठीक एक सप्ताह पहले कमरे की दीवारों पर चिपके चार्ट, हाइलाइटर की रेखाएँ और बिखरी किताबें अचानक शांत लगने लगीं। जैसे वे भी जानती हों अब युद्ध नहीं, संतुलन का समय है।

मारिया ने अपनी छोटी-सी "रेड फ्लैग" कॉपी खोली। मोटी किताबें बंद कर दी गई थीं। अब केवल वे बिंदु बचे थे जो बार-बार भूल जाते थे दवाओं की डोज़, क्लासिकल साइन, इमरजेंसी प्रोटोकॉल। वह धीरे-धीरे पढ़ती, फिर आँखें बंद कर दोहराती।

उधर आरव अपनी "गलतियों की डायरी" के सामने बैठा था। हर वह प्रश्न जिसे उसने कभी गलत किया था, अब उसे मुस्कुराता हुआ शिक्षक-सा लगता। वह समझ चुका था अंतिम सप्ताह में नई जानकारी जोड़ना नहीं, पुरानी भूलों को सुधारना ज़रूरी है।

दोनों ने तय किया अब कुछ नया नहीं पढ़ना। सोशल मीडिया बंद। दोस्तों से कम बात। तुलना से दूरी।

एक शाम मारिया ने फोन किया। "डर लग रहा है," उसने स्वीकार किया।

आरव ने हल्की हँसी के साथ कहा, "डर है तो इसका मतलब है कि यह महत्वपूर्ण है। बस उसे दिशा देनी है। "उन्होंने नींद से समझौता न करने का वचन लिया। रात बारह के बाद किताबें बंद। सुबह हल्की सैर, कुछ प्राणायाम,

फिर रिवीजन। अंतिम दिन की शाम दोनों ने किताबें पूरी तरह बंद कर दीं। बैग में एडमिट कार्ड, पहचान पत्र, पारदर्शी पेन सब व्यवस्थित रखा गया। फोन पर आखिरी बातचीत हुई। “जो होगा, साथ स्वीकार करेंगे,” मारिया ने कहा।

“हाँ,” आरव ने उत्तर दिया, “पर एक बात तय है — हमने अपनी ओर से कमी नहीं छोड़ी।”

उस रात नींद पूरी नहीं आई, पर मन अस्थिर भी नहीं था। क्योंकि अब उन्हें समझ आ चुका था —

नीट-पीजी केवल एक परीक्षा नहीं है। यह धैर्य, अनुशासन और आत्मविश्वास की अग्नि-परीक्षा है।

और वे दोनों उस अग्नि से गुजरने के लिए तैयार थे। सुबह अभी पूरी तरह उजली भी नहीं हुई थी जब वे अपने-अपने शहरों में परीक्षा केंद्र की ओर निकल पड़े। हवा में हल्की ठंडक थी, पर भीतर धड़कनों की गर्मी। मारिया के हाथ में पारदर्शी फाइल थी एडमिट कार्ड, पहचान पत्र, एक साधारण पेन। सब कुछ व्यवस्थित, जैसे वह अपने मन को व्यवस्थित करने की कोशिश कर रही हो।

परीक्षा केंद्र के बाहर भीड़ थी सैकड़ों चेहरे, कुछ शांत, कुछ बेचैन, कुछ अंतिम क्षण तक नोट्स पलटते हुए। उसे लगा मानो यह किसी मौन युद्ध का मैदान हो, जहाँ शस्त्र कागज़ और कलम हैं।

उधर आरव भी लंबी कतार में खड़ा था। सुरक्षा जाँच, बायोमेट्रिक सत्यापन, धातु जाँच हर चरण मानो यह याद दिला रहा था कि अब वापसी नहीं।

अंदर प्रवेश करते समय एक क्षण को दोनों ने अपने-अपने ईश्वर, अपने-अपने प्रयास को स्मरण किया।

कमरा शांत था, पर वह शांति बाहरी थी। भीतर हर विद्यार्थी के मन में तूफ़ान था। कंप्यूटर स्क्रीन पर निर्देश चमक रहे थे।

“आप परीक्षा प्रारंभ कर सकते हैं।”

उस एक क्लिक से पहले का क्षण सबसे लंबा था।

मारिया ने गहरी साँस ली।

आरव ने आँखें एक पल के लिए बंद कीं।

क्लिक।

पहला प्रश्न अपेक्षा से सरल था।
एक हल्की राहत — "अच्छी शुरुआत।"

पर दूसरा प्रश्न जटिल। विकल्प इतने समान कि निर्णय कठिन।
हृदय की गति थोड़ी तेज।

यहीं से वास्तविक परीक्षा आरंभ होती है। नीट-पीजी केवल ज्ञान नहीं पूछता; वह मन की स्थिरता जाँचता है। कुछ प्रश्न ऐसे आते हैं जिन्हें देखकर मुस्कान आ जाती है — "यह तो कल ही पढ़ा था।"

कुछ प्रश्न अचानक अहंकार तोड़ देते हैं "यह कहाँ से आ गया?"

मारिया ने एक कठिन प्रश्न चिह्नित किया "रिव्यू के लिए।"
उसे अपने हाथों की उँगलियाँ थोड़ी ठंडी लगीं। उसने पानी पिया। खुद से कहा —
"एक प्रश्न पूरी परीक्षा नहीं है।"

आरव के सामने एक लंबा क्लिनिकल केस आया।
लक्षणों की सूची, जाँच-रिपोर्ट, चार विकल्प।
उसके दिमाग में वार्ड का एक वास्तविक मरीज उभर आया।
उसने शांत होकर सोचा "यदि यह सचमुच मेरा रोगी होता, तो मैं क्या सोचता? "
और उत्तर चुन लिया।

स्क्रीन के कोने में चलता हुआ टाइमर सबसे बड़ा दबाव था।
हर मिनट जैसे याद दिलाता "तेज़ सोचो, पर सही सोचो।"

बीच-बीच में हल्की घबराहट उठती —
"दूसरे मुझसे बेहतर कर रहे होंगे।"
"क्या मेरी तैयारी पर्याप्त थी?"

पर परीक्षा कक्ष में कोई तुलना नहीं होती।
वहाँ केवल तुम और तुम्हारा मन होता है।

कभी आँखें छत की ओर उठ जातीं।
कभी हथेलियाँ पसीज जातीं।
कभी मन में अचानक खालीपन आता जैसे सब भूल गया हो।

ऐसे क्षणों में वही काम आता है जो महीनों की तैयारी ने सिखाया था —
रुकना, साँस लेना, आगे बढ़ना।

* * *

अब थकान दिखने लगती है।
स्क्रीन की रोशनी भारी लगती है।
गलत विकल्प आकर्षक लगने लगते हैं।

यहीं सबसे बड़ी परीक्षा है जल्दबाज़ी न करना।

मारिया ने अपने चिन्हित प्रश्न दोबारा देखे। कुछ में संशोधन किया, कुछ को वैसे ही छोड़ा।
आरव ने खुद से कहा "अब अनुमान नहीं, विवेक।"

जब अंतिम प्रश्न भी उत्तरित हो गया,
और "सबमिट" बटन सामने था —
हाथ एक पल के लिए रुक गया।

यह केवल क्लिक नहीं था —
यह एक वर्ष की मेहनत का समर्पण था।

क्लिक।

स्क्रीन बदल गई। परीक्षा समाप्त।

बाहर निकलते ही अलग-अलग भावनाएँ —
कुछ छात्र प्रश्नों पर चर्चा में लग गए।
कुछ चुपचाप चले गए।

मारिया ने तुरंत प्रश्नों की तुलना नहीं की।
उसे पता था अभी चर्चा करने से केवल शंका बढ़ेगी।

आरव ने भी वही निर्णय लिया।
उसने बाहर निकलते ही केवल इतना सोचा —
"मैंने पूरी ईमानदारी से प्रयास किया।"

और शायद हर नीट विद्यार्थी अंततः यही चाहता है —
कि परीक्षा कक्ष से निकलते समय उसे अपने प्रयास पर शर्म न हो।

नीट-पीजी का असली संघर्ष प्रश्नपत्र से कम,
अपने भय, अपनी शंका और अपने आत्मविश्वास के बीच होता है।

और जो उस भीतर के युद्ध को संतुलित कर लेता है,
वह परिणाम आने से पहले ही आधी जीत हासिल कर लेता है।

परिणाम वाले दिन शाम असामान्य रूप से शांत थी। कॉलेज के उसी प्रांगण में, जहाँ कभी वे पहले वर्ष में घबराए हुए कदमों से आए थे, आज वे जीवन के एक नए मोड़ पर खड़े थे।

एक वर्ष की कठोर साधना के बाद मारिया का चयन एनेस्थीसिया में हो चुका था। वह भी मुंबई के एक शीर्ष मेडिकल कॉलेज में। जिस शाखा के लिए उसने रातों की नींद त्यागी, वही शाखा अब उसे पुकार रही थी। उसके हाथ काँप रहे थे यह खुशी का कंपन था या भावनाओं का भार, वह स्वयं नहीं समझ पा रही थी।

आरव उसके पास ही खड़ा था।

परिणाम की सूची में अपना नाम न पाकर आरव को लगा मानो भीतर कुछ क्षण के लिए शून्य फैल गया हो। यह उस छात्र का शून्य था जिसने वर्षों तक हर परीक्षा में सफलता देखी थी। पहली बार जीवन ने उससे कहा था — *"अभी नहीं।"*

वह टूटना नहीं चाहता था, पर भीतर कहीं हल्की-सी दरार अवश्य पड़ी थी।

उसे मारिया पर गर्व था सच्चा, निर्मल गर्व। पर उसी गर्व की छाया में एक सूक्ष्म पीड़ा भी थी। यह पीड़ा ईर्ष्या की नहीं थी, बल्कि अधूरेपन की थी। वह सोच रहा था —

"क्या मैं सचमुच उतना समर्पित नहीं था? कहाँ कमी रह गई? क्या मेरी तैयारी ज्ञान की थी, या केवल परीक्षा की?"

रात को जब वह हॉस्टल के कमरे में अकेला बैठा, तो पहली बार पुस्तकों के बीच उसे एक अजीब-सी दूरी महसूस हुई। वही किताबें, जिन्हें वह अपना शस्त्र मानता था, आज उसे प्रश्न-चिह्न-सी लगीं।

पर आरव का स्वभाव पलायन का नहीं था। निराशा आई, पर स्थायी नहीं हुई। धीरे-धीरे उसने अपने भीतर झाँकना शुरू किया।

उसे एहसास हुआ यह असफलता अपमान नहीं, एक विराम है। यह पराजय नहीं, परिशोधन है।

उसे दधीचि की कथा याद आई अस्थियों का त्याग कर देवों को वज्र देना।

वह सोचने लगा "शायद मुझे भी अपने अहंकार की एक अस्थि त्यागनी होगी। सफलता का मोह, आत्म-विश्वास की जड़ता इन्हें छोड़ना होगा। "उसी रात उसने निर्णय लिया कि वह इस समय को व्यर्थ पछतावे में नहीं बदलेगा। वह अस्पताल में नौकरी जॉइन करेगा, व्यावहारिक अनुभव लेगा, और फिर पुनः प्रयास करेगा। मारिया के जाने की कल्पना से उसका हृदय भारी अवश्य हुआ। वह खुश था, पर खाली भी। उसे लगा कॉलेज के गलियारे अब कुछ और शांत हो जाएँगे। किन्तु उसी खालीपन में एक नई दृढ़ता जन्म ले रही थी।

आरव समझ रहा था —
डॉक्टर बनना केवल परीक्षा पास करना नहीं है;
डॉक्टर बनना है हर असफलता के बाद भी खड़े रहना।

उसकी आँखों में अब पहले जैसी चमक नहीं थी, पर जो प्रकाश था, वह अधिक स्थिर था।

यह असफलता उसके आत्मसम्मान को तोड़ नहीं सकी; उसने उसे परिपक्व कर दिया।

रात का समय था। कॉलेज की छत पर हल्की हवा चल रही थी। दूर शहर की रोशनियाँ टिमटिमा रही थीं जैसे जीवन के अनगिनत परिणाम, जिनमें कुछ हमारे होते हैं, कुछ नहीं।

मारिया और आरव मौन बैठे थे। परिणाम के बाद यह उनकी पहली लंबी बातचीत थी।

मारिया (धीरे):
तुम चुप हो। मुझसे कुछ कहोगे नहीं?

आरव (मुस्कुराकर):
क्या कहूँ?
तुमने जो चाहा था, वह पा लिया। मुझे खुशी है।

मारिया:
और तुम?

आरव:
मैंने जो चाहा था... वह अभी नहीं मिला।

(क्षण भर का मौन।)

मारिया:
क्या तुम्हें लगता है कि यह असफलता तुम्हें कम कर देती है?

आरव:
पहले लगा था।
जब स्क्रीन पर अपना नाम नहीं देखा, तो लगा जैसे वर्षों की मेहनत किसी खाली पन्ने पर गिर गई हो।

मारिया:
फिर?

आरव (आकाश की ओर देखते हुए):
फिर सोचा — क्या सचमुच परिश्रम केवल परिणाम से मापा जाता है?
अगर परीक्षा ही अंतिम सत्य है, तो अस्पताल के वे दिन क्या थे जब हमने किसी रोगी को बचाने की पूरी कोशिश की थी, चाहे परिणाम कुछ भी हो?

मारिया:
तुम कहना क्या चाहते हो?

आरव:
मुझे लगा... शायद मैं अभी अधूरा हूँ।
असफलता ने मुझे छोटा नहीं किया, उसने मुझे आईना दिखाया।

मारिया (धीरे):
और भविष्य?

आरव:
भविष्य कोई सीट नहीं है, मारिया।

भविष्य एक दिशा है।
तुम्हारी दिशा अभी मुंबई की ओर है, एनेस्थीसिया के ऑपरेशन थिएटर की ओर।
मेरी दिशा शायद कुछ समय अस्पताल की वार्ड में होगी अनुभव के बीच, मरीजों के बीच।

मारिया:
क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि दूरी हमें बदल देगी?

आरव (गंभीर स्वर में):
दूरी बदलती नहीं, स्पष्ट करती है।
अगर हमारे संबंध की जड़ें केवल साथ रहने में हैं, तो वे सूख जाएँगी।
पर अगर वे उद्देश्य में हैं सेवा, करुणा, समर्पण में तो वे और गहरी होंगी।

मारिया की आँखें नम हो गईं।

मारिया:
कभी-कभी मुझे लगता है, सफलता अपराध-सी लगती है।
तुम्हारे बिना यह खुशी अधूरी लगती है।

आरव (कोमल मुस्कान के साथ):
सफलता साझा करने से बढ़ती है, बाँटने से घटती नहीं।
तुम्हारी सफलता मेरी भी है।

मारिया:
और तुम्हारी असफलता?

आरव:
वह भी मेरी ही है और शायद सबसे बड़ा शिक्षक भी।

हवा थोड़ी तेज हुई। नीचे हॉस्टल के कमरों में दीपक अब भी जल रहे थे।

मारिया:
तो अब क्या?

आरव:
अब हम दोनों अपने-अपने तप में लगेंगे।
तुम ऑपरेशन थिएटर में जीवन की नाड़ियों की रक्षा करोगी।
मैं अस्पताल में रोगियों की श्वास, दर्द और आशाओं के बीच सीखूँगा।
और अगले वर्ष फिर प्रयास करूँगा।

मारिया:
क्या तुम्हें विश्वास है?

आरव (दृढ़ स्वर में):
हाँ।
क्योंकि मैंने आज सीखा है कि डॉक्टर होना केवल सफल होना नहीं है—
डॉक्टर होना है गिरकर भी उठना।

* * *

उस रात दोनों ने समझ लिया —
उनकी राहें भिन्न हो सकती हैं, पर उनका ध्येय एक है।

सफलता ने मारिया को ऊँचाई दी, और असफलता ने आरव को गहराई।

और शायद जीवन में ऊँचाई और गहराई दोनों का संतुलन ही पूर्णता है।

मुंबई, मारिया का पहला दिन मुंबई ने उसका स्वागत शोर से किया। भीड़, ट्रैफिक, सागर की गंध, और विशाल अस्पताल की ऊँची इमारतें। पी.जी. हॉस्टल का कमरा छोटा था, पर उसके लिए वह एक नई तपशाला थी। दीवार पर उसने वही छोटा-सा दीप-चित्र लगा दिया जो कॉलेज के कमरे में था — प्रतीक उस स्थिर प्रकाश का, जो उसे भीतर से संभाले रखता था। पहले दिन ऑपरेशन थिएटर के बाहर खड़ी मारिया ने गहरी साँस ली। एनेस्थीसिया केवल औषधि देना नहीं था; यह जीवन और अचेतनता के मध्य सूक्ष्म सेतु बनना था।

सीनियर रेज़िडेंट ने पूछा —
"डॉक्टर, आप जानती हैं एनेस्थीसिया में सबसे बड़ा गुण क्या है?"

मारिया ने उत्तर दिया —
"सजगता।"

सीनियर मुस्कुराए —
"नहीं। विनम्रता।
यहाँ आप दिखते कम हैं, पर जिम्मेदारी सबसे अधिक होती है।"

मारिया समझ गई यह शाखा उसके स्वभाव से मेल खाती है। वह हमेशा पृष्ठभूमि में रहकर भी संपूर्ण समर्पण से काम करने वाली रही थी। पहले ही सप्ताह में उसने एक जटिल सर्जरी में सहयोग किया। मॉनिटर पर चलती हृदय की रेखाएँ उसे जीवन की कविता-सी प्रतीत होतीं।

रात को हॉस्टल की खिड़की से समुद्र का शोर सुनते हुए उसने आरव को संदेश भेजा —
"आज पहली बार किसी जीवन की श्वास को अपने हाथों से संभाला।"

उधर आरव ने उसी अस्पताल में नौकरी जॉइन कर ली थी जहाँ वे इंटर्नशिप कर चुके थे।

वह वार्ड में था रोगियों के बीच, उनके परिजनों के प्रश्नों के बीच, मृत्यु और जीवन के प्रतिदिन के संघर्ष के बीच। हर सुबह राउंड के समय वह केवल रिपोर्ट नहीं पढ़ता था, चेहरों को पढ़ता था।

एक दिन एक वृद्ध रोगी ने उसका हाथ पकड़कर पूछा —
"डॉक्टर साहब, ठीक हो जाऊँगा न?"

क्षण भर के लिए आरव चुप हो गया।
फिर बोला — "हम पूरी कोशिश करेंगे।"

उसे महसूस हुआ यह वाक्य किसी परीक्षा के उत्तर से कहीं अधिक कठिन है।

धीरे-धीरे उसने अनुभव करना शुरू किया कि किताबों का ज्ञान और रोगी का स्पर्श दोनों में अंतर है। यहाँ निर्णय केवल अंक के लिए नहीं, किसी जीवन के लिए होते हैं।

रात को जब वह अपने कमरे में लौटता, तो मेज़ पर खुली पुस्तकों के बीच अब अस्पताल के अनुभव जुड़ने लगे थे।

वह फिर से पी.जी. की तैयारी कर रहा था — पर अब दृष्टि बदल चुकी थी।
अब वह केवल सीट के लिए नहीं पढ़ रहा था, बल्कि समझ के लिए।

फोन पर उनकी बातचीत अब छोटी, पर गहरी होती थी।

मारिया:
"आज एक केस में कुछ मिनटों के लिए बी.पी. गिर गया था। हाथ काँप गए।"

आरव:
"डर अच्छा है। वह हमें सजग रखता है।"

आरव:
"आज एक रोगी को खो दिया... पहली बार लगा, डॉक्टर होना कितना असहाय भी है।"

मारिया:
“हम असहाय नहीं होते। हम सीमित होते हैं।”

दूरी ने उन्हें अलग नहीं किया; उसने उन्हें और परिपक्व बना दिया।

मुंबई के ऑपरेशन थिएटर में जलती तेज़ सफेद रोशनी, और यहाँ वार्ड में जलता हुआ शांत पीला दीप — दोनों के केंद्र में एक ही भावना थी सेवा। मारिया ऊँचाई पर अनुभव अर्जित कर रही थी।

आरव गहराई में उतर रहा था। दोनों समझ चुके थे डॉक्टर की पहचान केवल उसकी डिग्री से नहीं, उसकी करुणा, धैर्य और निरंतर प्रयास से होती है।

समय आगे बढ़ रहा था।
मुंबई का समुद्र और छोटे शहर की शांत सड़कें दोनों उनके संघर्षों के साक्षी थे।

पर भीतर जो प्रकाश था, वह एक ही था —
अडिग, स्थिर, और भविष्य की ओर उन्मुख।

* * *

“दूसरा प्रयास” - एक वर्ष बीत चुका था।

मुंबई का समुद्र अब मारिया के लिए नया नहीं रहा था, और छोटे शहर का अस्पताल अब आरव के लिए प्रशिक्षण-स्थल से अधिक एक उत्तरदायित्व बन चुका था। पर भीतर कहीं एक मौन गणना चल रही थी अगली परीक्षा की तिथि निकट थी।

आरव के दिन अब और अधिक अनुशासित हो गए थे। सुबह की राउंड्स, दिनभर की व्यस्तता, और रात के सन्नाटे में किताबों के साथ उसका संघर्ष सब कुछ जैसे एक ही दिशा में सिमट गया था। यह सिर्फ एक परीक्षा नहीं थी, बल्कि खुद को साबित करने का दूसरा अवसर था।

मारिया अब पहले से अधिक स्थिर लगती थी। मुंबई की भागदौड़ में उसने अपने लिए एक लय खोज ली थी, पर कभी-कभी शाम को समुद्र किनारे खड़े होकर उसकी नज़रें अनजाने ही किसी दूर बिंदु पर ठहर जातीं जैसे वह किसी अधूरी बातचीत को याद कर रही हो।

इस बार आरव के पढ़ाई में उतावलापन नहीं था। पहले वह अंक पाने के लिए पढ़ता था; अब वह समझने के लिए पढ़ रहा था। वार्ड में दिनभर रोगियों के बीच रहने के बाद रात को वह पुस्तक खोलता।

अब किताबों के शब्द अनुभव से जुड़ जाते थे। जब वह हृदय-विकार पढ़ता, तो उसे उस वृद्ध रोगी का चेहरा याद आता। जब वह शल्य-चिकित्सा की जटिलता पढ़ता, तो उसे अपने भीतर निर्णय की गंभीरता का अनुभव होता। एक रात उसने स्वयं से कहा “यदि इस बार भी नहीं हुआ, तो क्या? ”भीतर से उत्तर आया “तो फिर से प्रयास। ”यह उत्तर भयमुक्त था।

मारिया अब जूनियर नहीं रही थी। वह ऑपरेशन थिएटर में आत्मविश्वास से खड़ी होती। एक दिन जटिल सर्जरी के दौरान वरिष्ठ सर्जन ने अचानक कहा—

“डॉ. मारिया, आप मॉनिटर संभालिए। ”उसके हाथों में अब केवल दायित्व नहीं, विश्वास भी था।

रात को उसने आरव से कहा “कभी-कभी लगता है, हम जीवन को क्षण भर के लिए थामे रहते हैं। और वही क्षण हमारी पूरी शिक्षा का सार है। ”आरव ने उत्तर दिया —

“शायद इसी लिए परीक्षा भी आवश्यक है वह हमें याद दिलाती है कि हम अभी विद्यार्थी हैं।”

अप्रेषित पत्र वर्षा, प्रेम और मुम्बई की रात्रि

उस रात उसने अपने कमरे की खामोशी में, उसने एक पत्र लिखा...एक ऐसा पत्र, जो कभी भेजा नहीं गया

प्रिय आरव,

यह पत्र लिखते समय बाहर वर्षा हो रही है।
मुम्बई की वर्षा अनवरत, गहन, और कुछ-कुछ हठीली।
जैसे मन के भीतर दबे हुए शब्द, जो रुकना नहीं जानते।

बालकनी से समुद्र धुंधला दिखता है।
दूर बिजली चमकती है, और मैं सोचती हूँ —
क्या तुम्हारे नगर में भी आज मेघ गर्जे होंगे?

दिन भर अस्पताल में थी।
सुबह एक जटिल शल्यक्रिया थी —
तीन घंटे तक मैंने एक वृद्ध रोगी के श्वासों को नियंत्रित रखा।
मॉनिटर पर चलती हृदय-रेखा को देखती रही —
सीधी न हो जाए, यही प्रार्थना थी।

तुम्हें याद है, हम पढ़ते थे कि एनेस्थीसिया केवल दवा नहीं,
विश्वास है रोगी स्वयं को हमारे हाथों में सौंप देता है।

आज जब ऑपरेशन सफल हुआ,
रोगी के परिजन की आँखों में जो कृतज्ञता थी,
वह क्षण भर को सब थका देता है... फिर सब सार्थक भी कर देता है।

पर ऐसे ही किसी शांत क्षण में
अचानक तुम्हारी याद आ जाती है।

यह शहर तेज़ है, आरव।
यहाँ लोकल ट्रेनें भी हृदय की धड़कनों की तरह भागती हैं।
हर चेहरा किसी लक्ष्य की ओर अग्रसर।

पर इस भीड़ में भी
कभी-कभी एक गहरा एकांत उतर आता है।

वर्षा की इस रात्रि में
जब काँच पर बूँदें गिरती हैं,
तो लगता है जैसे समय भी ठहर गया हो।

मैं सोचती हूँ —
तुम अभी क्या कर रहे होंगे?
किसी मोटी पुस्तक के पृष्ठ पलटते हुए
किसी जटिल प्रश्न को हल करने में लगे होगे?
शायद कॉफी का मग पास रखा हो,
और आँखों में वही जिद —
"इस बार सफल होना है।"

आरव,
तुम्हारा वह संघर्ष मुझे प्रेरित करता है।
जब-जब मैं ऑपरेशन थिएटर में प्रवेश करती हूँ,
मुझे तुम्हारी तैयारी का ध्यान आता है।
जैसे मैं जीवन को स्थिर रखने का प्रयास करती हूँ,
वैसे ही तुम अपने भविष्य को स्थिर करने में लगे हो।

कभी लगता है —
हमारा प्रेम भी इस वर्षा की तरह है।

पास नहीं, फिर भी स्पर्श करता हुआ।
दिखता नहीं, पर भीगाता हुआ।

विरह शायद हमें दुर्बल नहीं बना रहा,
बल्कि परिपक्व कर रहा है।

यदि हम प्रतिदिन साथ होते,
तो शायद यह गहराई न आती।
अब दूरी ही संवाद बन गई है।

आज समुद्र की लहरें तीव्र हैं।
मैंने हथेली बाहर बढ़ाई —
वर्षा की कुछ बूँदें उसमें ठहर गईं।

मन में एक मौन प्रार्थना उठी —
ईश्वर तुम्हें शक्ति दें।
जब तुम परीक्षा कक्ष में बैठो,
तो तुम्हारा मन वैसा ही स्थिर रहे
जैसा ऑपरेशन से पूर्व रोगी की नाड़ी को स्थिर करने का मेरा प्रयास।

तुम सफल हो, आरव।
परिणाम चाहे जो हो,
तुम्हारा धैर्य और परिश्रम तुम्हें परिभाषित करता है।

यह पत्र शायद कभी न भेज सकूँ।
क्योंकि इसमें शब्दों से अधिक भाव हैं,
और भावों को अक्सर मौन ही अधिक गरिमा देता है।

फिर भी लिखना आवश्यक था —
जैसे वर्षा को बरसना आवश्यक है।

यदि कभी भविष्य में
तुम इन दिनों को स्मरण करो,
तो जानना — मुम्बई की किसी वर्षा-रात्रि में
एक बालकनी में खड़ी होकर मैंने तुम्हारे लिए प्रेम, विश्वास और प्रार्थना को एक साथ अनुभव किया था।

तुम्हारी,
मारिया

(पत्र लिखकर वह देर तक उसे देखती रही।
फिर मोड़कर डायरी के भीतर रख दिया —
अप्रेषित, पर अमिट।)

* * *

परीक्षा से एक दिन पहले आरव शहर के उसी मंदिर के बाहर खड़ा था, जहाँ कभी इंटर्नशिप के दिनों में गया था। उसने कोई विशेष प्रार्थना नहीं की।

केवल इतना कहा "जो उचित हो, वही हो। मुझे सामर्थ्य देना परिणाम स्वीकार करने की।"

उस रात उसने मारिया से बात की।

मारिया:
"डर लग रहा है?"

आरव (हल्की हँसी के साथ):
"इस बार कम। क्योंकि अब मुझे असफलता से डर नहीं लगता। "

मारिया:
"तो तुम जीत चुके हो।"

परीक्षा का दिन

प्रश्नपत्र सामने था।
कुछ प्रश्न कठिन थे, कुछ सरल।

पर इस बार वह घबराया नहीं।
हर उत्तर लिखते समय उसे लगा वह केवल स्मृति से नहीं, अनुभव से लिख रहा है।

जब परीक्षा समाप्त हुई, तो बाहर निकलते समय उसके चेहरे पर शांति थी।

* * *

परिणाम

दिन फिर आया — परिणाम का।
मारिया मुंबई से बार-बार वेबसाइट देख रही थी।

आरव अस्पताल की ड्यूटी के बीच था।

अचानक उसका फोन बजा।

मारिया (उत्साहित स्वर में):
"देखा?"

क्षण भर की चुप्पी।
फिर आरव की धीमी, पर स्थिर आवाज आई —

"हाँ... इस बार हो गया।"

दूसरी ओर मौन।
फिर हँसी, फिर आँसू।

उस क्षण दोनों ने समझा —
सफलता केवल परिणाम नहीं थी।
सफलता वह परिवर्तन था जो भीतर आ चुका था।

पहली असफलता ने आरव को गहराई दी थी।
दूसरे प्रयास ने उसे स्थिरता दी।

मारिया ने महसूस किया —
प्रतीक्षा भी प्रेम का एक रूप है।
और संघर्ष, समर्पण का।

* * *

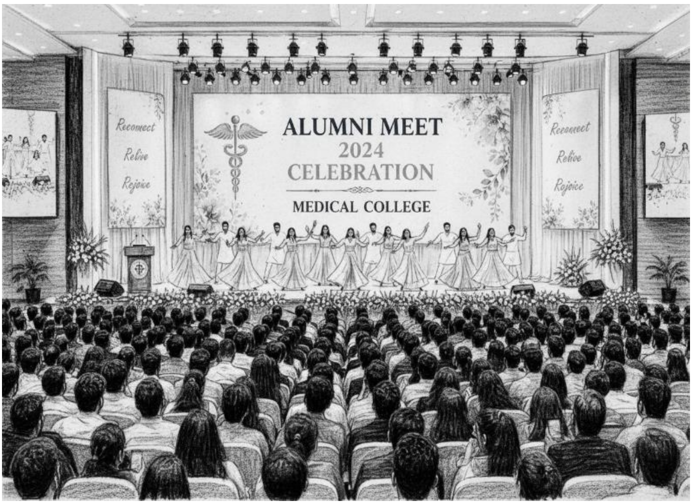
ALUMNI MEET
2024
CELEBRATION
MEDICAL COLLEGE
Reconnect
Relive
Rejoice
Reconnect
Relive
Rejoice

दो नगर अब भी अलग थे।
पर अब उनके बीच दूरी नहीं, दिशा थी।

भविष्य उन्हें फिर एक शहर में मिलाएगा या नहीं यह अभी अज्ञात था। पर दोनों जानते थे उनका संबंध केवल साथ चलने का नहीं, एक-दूसरे को बेहतर बनने देने का था।

वर्षों बीत गए।

मुंबई के उसी बड़े अस्पताल में, जहाँ कभी मारिया रेज़िडेंट के रूप में नर्वस खड़ी होती थी, आज वह वरिष्ठ एनेस्थेसियोलॉजिस्ट थी ऑपरेशन थिएटर में उसकी उपस्थिति शांति का पर्याय बन चुकी थी।

उधर आरव, जिसने असफलताओं को सीढ़ी बनाया, अंततः अपने मनचाहे विषय में चयनित होकर एक संवेदनशील चिकित्सक के रूप में स्थापित हो चुका था।

समय ने उन्हें बहुत कुछ सिखाया —
रैंक महत्वपूर्ण है, पर चरित्र उससे अधिक।
डिग्री आवश्यक है, पर दया उससे कहीं अधिक।
प्रेम केवल साथ रहना नहीं, बल्कि एक-दूसरे के स्वप्नों को सम्मान देना है।

वसंत की एक उजली सुबह। चिकित्सा महाविद्यालय का प्रांगण जैसे वर्षों की स्मृतियों को सँजोए खड़ा था। यह वही **चिकित्सा महाविद्यालय** था, जिसकी पावन धरा पर उनके स्वप्नों ने प्रथम आकार लिया जहाँ अध्ययन ने उन्हें ज्ञान दिया, अनुभव ने उन्हें संयम सिखाया, और चिकित्सा ने उनके जीवन को उद्देश्य प्रदान किया। मुख्य भवन पर रंगीन पताकाएँ सजी थीं। प्रवेश-द्वार **पर "पूर्व छात्र सम्मेलन" का** आकर्षक पट लगा था। प्रांगण में हँसी की ध्वनियाँ, आलिंगन, वर्षों बाद मिलने की आतुरता सब मिलकर वातावरण को एक अलग ही ऊष्मा दे रहे थे। पलाश-वृक्ष फिर से दहक रहा था; मानो स्मृतियों की अग्नि को पुनः प्रज्वलित कर रहा हो।

आरव ने जब महाविद्यालय की सीढ़ियों पर कदम रखा, तो उसे लगा जैसे समय ने चक्र पूरा कर लिया हो। वही गलियारे, वही दीवारें पर वह स्वयं अब पहले

जैसा नहीं था। जीवन ने उसे गढ़ा था। कुछ ही दूर मारिया भी अपने पूर्व सहपाठियों से घिरी थी। उसके चेहरे पर आत्मविश्वास था, पर आँखों में वही पुरानी संवेदनशीलता।

उद्‌घाटन-सभागार में जब तीनों आरव, मारिया और नंदिता मंच पर आमंत्रित हुए, तो छात्रों ने लंबे समय तक तालियाँ बजाईं। किसी ने उनके संघर्षों का उल्लेख किया, किसी ने उनकी उपलब्धियों का। पर उन औपचारिक शब्दों के पीछे जो अनकहा था, वह केवल वे तीनों जानते थे।

समारोह के बाद भीड़ धीरे-धीरे बिखरने लगी। स्मृतियाँ अपने-अपने कोनों में लौटने लगीं। मारिया के मन में एक अजीब-सी हलचल उठी। वर्षों से एक प्रश्न उसकी चेतना के तल में स्थिर था आज वह उसे छू लेना चाहती थी।

वह चुपचाप पुस्तकालय की ओर चली गई। वही पुस्तकालय जहाँ कभी एक क्षण ने उसके भीतर असुरक्षा की लहर पैदा की थी। वही लकड़ी की मेज़ें, वही धूप की किरणें, जो खिड़की से भीतर आती थीं। वह कुर्सी पर बैठी और अतीत की परतें खुलने लगीं।

कुछ ही क्षणों बाद उसने पीछे से पदचाप सुनी। नंदिता थी। वही सहज मुस्कान, वही संतुलन। दोनों की दृष्टियाँ मिलीं वर्षों की दूरी जैसे एक क्षण में मिट गई।

“तुम यहाँ आओगी, यह मुझे पता था,” नंदिता ने धीमे स्वर में कहा।

मारिया हल्की-सी मुस्कराई, पर उसकी आँखों में एक गहरी गंभीरता थी।
“कुछ स्थान ऐसे होते हैं जहाँ हम अपने सच्चे प्रश्नों से मिलते हैं,” उसने कहा।

कुछ पल मौन रहा। फिर मारिया ने धीरे से पूछा, “नंदिता, तुमने अपने जीवन के बारे में कभी विस्तार से नहीं बताया। “क्या कभी तुम्हारे हृदय ने किसी के लिए वह कोमल, अनकहा स्पंदन महसूस किया है – जो बिना कारण भी तुम्हें उसकी ओर खींच ले…जब उसकी एक झलक दिन को अर्थ दे दे, और उसकी अनुपस्थिति में सब कुछ अधूरा-सा लगे? क्या कभी ऐसा हुआ है कि तुमने कुछ कहा न हो, फिर भी बहुत कुछ कह दिया हो – सिर्फ एक नजर, एक मौन, या एक छोटे-से क्षण में?

नंदिता ने खिड़की से बाहर झाँका। पलाश की पंखुड़ियाँ हवा में तैर रही थीं।

“मन तो बहुत कुछ चाहता है, मारिया,” उसने सहजता से कहा, “पर हर चाहत को अभिव्यक्ति नहीं मिलती। कुछ भाव ऐसे होते हैं जो हमारे भीतर रहकर ही हमें परिपक्व करते हैं।”

मारिया ने उसकी ओर गहराई से देखा — जैसे उसकी आँखों के पार, उसके मन के सबसे छुपे हुए कोनों को पढ़ लेना चाहती हो। हवा में एक अजीब-सी खामोशी घुल गई थी, और उस खामोशी में उसका सवाल और भी भारी लग रहा था।

नंदिता की मुस्कान में एक क्षणिक कंपन आया — इतना हल्का कि शायद कोई और देख भी न पाता, पर मारिया की नज़र से वह छिप नहीं सका। उसने एक गहरी साँस ली, जैसे किसी पुराने, दबे हुए एहसास को छूने की हिम्मत जुटा रही हो। “हाँ...” उसने धीमे से कहा, उसकी आवाज़ में एक अनकही थकान और सुकून दोनों थे, “पर वह प्रेम ऐसा था जिसे मैंने कभी शब्द नहीं दिए।”

कभी-कभी हम किसी को पाना नहीं, उसे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं। और यदि उसके पथ में हमारा मौन ही आवश्यक हो, तो वही सही। ” उसकी आवाज़ में कोई शिकायत नहीं थी — सिर्फ एक शांत-सी स्वीकार्यता थी, जैसे उसने अपने ही दिल को समझा लिया हो। मारिया की साँस जैसे थम गई। उसके होंठ हिले, पर शब्द पूरे नहीं बन पाए “क्या वह” उसने वाक्य अधूरा छोड़ दिया। वाक्य अधूरा रह गया, लेकिन दोनों समझ गईं कि वह किसकी बात कर रही है।

नंदिता ने उसकी ओर सीधे नहीं देखा।
“तुम जानती हो, आरव में एक अलग-सी ईमानदारी थी। उसका संघर्ष, उसका संयम मुझे आकर्षित करता था। पर मैंने कभी कुछ कहा नहीं। क्योंकि मैंने देखा उसके मन में तुम्हारा स्थान स्पष्ट था। और **प्रेम यदि स्वामित्व में बदल जाए तो वह स्वयं को ही आहत करता है।”**

मारिया के भीतर एक साथ कई भाव उठे, आश्चर्य, अपराधबोध, करुणा, कृतज्ञता।
“तुमने मुझे कभी बताया क्यों नहीं?” उसकी आवाज़ भर्रा गई।

नंदिता ने उसका हाथ थाम लिया। “क्योंकि तुम्हारा विश्वास टूटता। और मैं तुम्हें असुरक्षित नहीं देख सकती थी। प्रेम यदि सच्चा हो तो वह त्याग में भी अपमान नहीं देखता। मैंने जो महसूस किया, वह मेरी साधना थी तुम्हारे संबंध की परीक्षा नहीं। ” मारिया की आँखों से आँसू बह निकले। “और मैं मैं उस दिन तुम्हें और आरव को साथ देखकर कितनी छोटी हो गई थी। मुझे लगा था शायद मैं तुम्हें खो दूँगी। "“तुमने स्वयं को पाया,” नंदिता ने कहा, “और यही पर्याप्त है। प्रेम का मूल्य पाने में नहीं, विश्वास में है। यदि मैं अपने भाव कह देती, तो शायद हमारे बीच जो निर्मलता थी, वह खो जाती। मैं तुम्हारी मित्र थी और वही रहना चाहती थी। "पुस्तकालय का मौन अब बोझिल नहीं था। वह स्वीकार का मौन था।

उसी समय बाहर से हँसी की ध्वनि आई। आरव दूर से उन्हें खोजता हुआ आ रहा था। उसका चेहरा वैसा ही सरल, वैसा ही उजला था। **वह अब भी अनभिज्ञ था उस सूक्ष्म त्याग से, जिसने कभी उसके जीवन को संतुलित रखा।**

मारिया ने नंदिता की ओर देखा। उसके भीतर का एक संशय आज विलीन हो चुका था।

“तुम्हारा प्रेम...” उसने कहा, “शायद हमसे अधिक परिपक्व था।"

नंदिता ने धीरे से मुस्करा दिया। “**प्रेम की पूर्णता उसके मिलन में नहीं, उसकी निष्ठा में** है।"

तीनों फिर प्रांगण में साथ खड़े थे। पलाश के नीचे। वर्षो का वृत्त पूर्ण हो चुका था।

अब मारिया के मन में कोई भय नहीं था। उसे लगा सच्चा प्रेम वह है जो विश्वास के सहारे खड़ा हो, तुलना के सहारे नहीं। और नंदिता ने उसे यह सिखाया था कि त्याग, यदि अहंकार से मुक्त हो, तो वह पराजय नहीं आंतरिक विजय है।

संध्या ढल रही थी। आकाश के रंग बदल रहे थे। तीनों ने एक-दूसरे की ओर देखा बिना किसी उलझन, बिना किसी संदेह। उन्हें अब समझ आ गया था प्रेम का सबसे शुद्ध रूप वह है जो स्वतंत्रता देता है, जो अपने हिस्से का मौन भी स्वीकार करता है। विश्वास ही उसका आधार है, और त्याग उसकी ऊष्मा।

पलाश प्रज्वलित था पर उस प्रज्वलन में अब कोई व्याकुलता नहीं थी। संध्या की हल्की धूप उसकी लाल पंखुड़ियों पर ठहरकर जैसे उन्हें और भी गहरा बना रही थी। वह अग्नि अब दहकती नहीं थी, बस एक मृदु प्रकाश बनकर वातावरण में ठहर गई थी।

हवा के हल्के स्पर्श से उसकी पंखुड़ियाँ काँप उठतीं, और फिर एक-एक कर ज़मीन पर उतर आतीं मानो वह अतीत के एक-एक पल को याद कर रही हो।"

एक समय था, जब यह स्थान केवल मिलन का था हँसी का, अनकही बातों का, और उन सपनों का, जिन्हें शब्दों में ढालना आसान नहीं होता। पर आज वही स्थान स्मृतियों का था गहरा, शांत, और कहीं भीतर तक उतरता हुआ। तीनों कुछ क्षणों तक वहीं खड़े रहे, बिना कुछ कहे। जैसे शब्द अब अनावश्यक हो गए हों।

उन्होंने पीछे मुड़कर अपनी यात्रा को देखा —

डिसेक्शन हॉल की वह पहली सुबह...

तेज़ फॉर्मेलिन की गंध ने जैसे भीतर तक दस्तक दी थी। कदम अपने आप धीमे हो गए थे — जैसे हर किसी को अहसास हो गया हो कि आज कुछ बदलने वाला है। सामने शांत लेटा हुआ वह शरीर अब सिर्फ एक "शव" नहीं था, बल्कि एक मौन शिक्षक था जो बिना शब्दों के बहुत कुछ सिखाने वाला था।

जब पहली बार स्कैल्पेल "हाथ में लिया तो उँगलियाँ सच में काँप गई थीं। यह सिर्फ एक प्रक्रिया नहीं थी यह जीवन और मृत्यु के बीच की उस पतली रेखा को छूने जैसा था, जिसे अब तक सिर्फ किताबों में पढ़ा था।

उस मौन में डर भी था, झिझक भी पर साथ ही एक अजीब-सी कृतज्ञता भी थी। जैसे हर किसी ने भीतर ही भीतर स्वीकार किया हो कि यह सीख किसी के अंतिम दान की वजह से संभव हुई है।

उस दिन हमने सिर्फ शरीर-रचना नहीं सीखी थी हमने यह सीखा था कि चिकित्सा का पहला पाठ ज्ञान नहीं, विनम्रता होता है। और शायद उसी क्षण हम सिर्फ छात्र नहीं रहे, थोड़ा-थोड़ा डॉक्टर बनना शुरू हो गए थे।

मेडिकल ओथ लेते समय काँपते हाथ...

वह सिर्फ एक शपथ नहीं थी वह एक अनकहा भय भी था। क्या वे सच में उस वचन के योग्य बन पाएँगे? क्या वे हर जीवन को उतनी ही ईमानदारी से थाम पाएँगे?

नीट-पीजी की वे लंबी, बेचैन रातें...
जहाँ किताबें खुली रहती थीं, पर आँखों में सिर्फ थकान और तुलना तैरती थी। हर टेस्ट, हर रैंक, हर नंबर जैसे आत्म-मूल्य का पैमाना बन गया था।

असफलताओं का वह मौन दर्द...
जिसे किसी ने खुले शब्दों में नहीं कहा, पर हर कोई जानता था। वह एक साझा अनुभव था — पर फिर भी हर किसी ने उसे अकेले ही जिया। रात के उन लम्बे, ठहरे हुए घंटों में... जब किताबें खुली रहती थीं, पर आँखें बार-बार धुँधला जाती थीं। जब दीवार पर टिकती नज़रें पढ़ नहीं रहीं होती थीं, बस सोच रही होती थीं— *"क्या मैं सच में इसके लिए बना हूँ?"*

वह दर्द सिर्फ एक परिणाम का नहीं था — वह अपने ही विश्वास के डगमगाने का था।

हर असफल प्रयास के साथ जैसे भीतर कोई हल्की-सी आवाज़ टूटती थी, और फिर भी अगले ही दिन उसी आवाज़ को समेटकर फिर खड़ा होना पड़ता था।

पर यह दर्द सिर्फ भीतर तक सीमित नहीं था...
इसके बाहर भी एक दुनिया थी — उम्मीदों की, तुलना की, और लगातार पूछे जाने वाले सवालों की।

घर से आती आवाज़ें —
"इस बार हो जाएगा न? "
"इतनी मेहनत कर रहे हो, अब तो रिज़ल्ट आना ही चाहिए..."
उन शब्दों में विश्वास भी था, पर एक अनकहा दबाव भी जैसे उनकी उम्मीदों का भार धीरे-धीरे अपने कंधों पर महसूस होने लगता था।

साथियों की दुनिया भी आसान नहीं थी।
किसी का चयन हो जाना, किसी का बेहतर रैंक ले आना... और फिर

अनजाने में शुरू हो जाने वाली तुलना। "उसने कर लिया... तो मैं क्यों नहीं? " यह सवाल प्रेरणा भी बनता था, और कभी-कभी भीतर एक चुभन भी।

और इन सबके बीच — भविष्य का वह अनिश्चित डर।
"अगर इस बार भी नहीं हुआ तो? "
"क्या मैं पीछे रह जाऊँगा? "
"क्या मेरी ज़िंदगी यहीं अटक जाएगी?"

नीट-पीजी की तैयारी सिर्फ पढ़ाई नहीं रह जाती —

वह एक लगातार चलने वाली दौड़ बन जाती थी, जहाँ समय कम लगता था और लक्ष्य दूर।

दिन-रात का अंतर मिट जाता था... कैलेंडर के पन्ने बदलते रहते थे, पर मन एक ही जगह अटका रहता था। कमरे का अँधेरा उस दर्द का साक्षी बनता था — जहाँ आँसू बिना आवाज़ के बहते थे, और कोई उन्हें पोंछने वाला नहीं होता था। फोन उठाकर किसी को बताने का मन होता था... पर शब्द नहीं मिलते थे। और शायद एक डर भी होता था — कि कहीं कह देने से यह दर्द और वास्तविक न हो जाए।

कभी-कभी आईने में खुद से नज़र मिलाना भी मुश्किल हो जाता था।
जैसे सवाल बाहर से नहीं, भीतर से उठ रहे हों —
"कहाँ कमी रह गई? "
"क्या मैं और बेहतर कर सकता था?"

और फिर भी...

उसी मौन में एक जिद जन्म लेती थी — बहुत धीमी, पर बहुत सच्ची।

एक ऐसी जिद, जो किसी को साबित करने के लिए नहीं... खुद को फिर से खड़ा करने के लिए होती थी।

अगली सुबह, वही किताबें फिर खुलती थीं।

वही पन्ने, वही विषय... पर इस बार आँखों में थोड़ी और थकान के साथ... थोड़ी और दृढ़ता भी होती थी।

शायद यही असफलताओं का सबसे अनकहा सच था —

कि वे हमें तोड़ती कम हैं, और भीतर कहीं बहुत गहराई में... हमें नया बनाना शुरू कर देती हैं।

शायद यही सब चीज़ें... आगे चलकर डॉक्टरों को एक अलग इंसान बनाती हैं।

यह सिर्फ एक पेशा नहीं रह जाता — यह एक तपस्या बन जाती है।
उन अनगिनत रातों का तप... जब नींद से ज्यादा ज़रूरी किताबें लगती थीं।
उन असफलताओं का त्याग... जब अपने ही मन को समझाकर फिर से उठना पड़ता था।
और उस निरंतर परिश्रम का परिणाम... जो किसी को दिखता नहीं, पर भीतर गहराई तक आकार देता रहता है।

धीरे-धीरे यह सफर इंसान को बदल देता है —

वह सिर्फ ज्ञान नहीं पाता, वह संवेदनशील होना सीखता है... धैर्य रखना सीखता है... और सबसे ज़रूरी, टूटकर भी संभलना सीखता है।

और फिर... सफलताओं का वह विनम्र गर्व।

कोई शोर नहीं, कोई उत्सव नहीं — बस एक हल्की-सी मुस्कान, जैसे मन ने खुद से कहा हो,
"शायद अब मैं थोड़ा और तैयार हूँ।"

वह खुशी अलग थी — भीतर से उठती हुई, शांत और गहरी।
न किसी को साबित करने की जल्दी, न किसी से तुलना की चाह।
बस इतना-सा एहसास... कि जिन अनगिनत रातों में खुद को संभाला था,
जिन क्षणों में हार मानने का मन हुआ था,
और फिर भी आगे बढ़ते रहे थे —
उन सबका एक अर्थ था।

यह सफलता सिर्फ एक परिणाम नहीं थी,
यह उन सभी छोटे-छोटे प्रयासों का संचित उत्तर थी...
जो कभी किसी ने देखे नहीं, पर हर दिन जिए गए थे।

और शायद इसी लिए...
उस मुस्कान में गर्व से ज़्यादा कृतज्ञता थी —
अपने सफर के लिए, अपने संघर्ष के लिए,
और उन सभी लोगों के लिए...
जो चुपचाप इस यात्रा का हिस्सा रहे।

संघर्ष, प्रेम, मित्रता, त्याग, जिम्मेदारी... और अंततः परिपक्वता — जैसे उनकी पूरी यात्रा इन्हीं शब्दों में समा गई हो। हर पीड़ा, हर स्पर्श, हर विछेद और हर मिलन धीरे-धीरे एक ऐसे निःशब्द विस्तार में विलीन हो गए थे, जहाँ शब्दों की आवश्यकता नहीं थी — केवल अनुभव ही अपना अर्थ स्वयं कह रहा था। "कुछ क्षणों तक वे तीनों वहीं खड़े रहे — जैसे उस क्षण को पूरी तरह जी लेना चाहते हों, बिना उसे शब्दों में बाँधे। फिर हवा का एक हल्का झोंका आया — और कुछ और पंखुड़ियाँ टूटकर उनके बीच बिखर गईं। उन्होंने एक बार फिर पलाश की ओर देखा। वह प्रज्वलित था — पर अब उसकी अग्नि में कोई अधीरता नहीं थी, केवल एक स्थिर, मौन उजास था। और शायद उसी क्षण, बिना कहे, वे समझ गए — कि यह अंत नहीं था। यह उस यात्रा का वह बिंदु था, जहाँ लौटना नहीं होता — केवल आगे बढ़ना होता है, अपने-अपने रास्तों पर... पर भीतर कहीं, एक ही उजाले को लिए हुए। वे मुड़े — धीरे, पर निश्चित कदमों से — और आगे बढ़ गए।

चिकित्सा महाविद्यालय के प्रांगण के प्रवेश-द्वार पर 'पूर्व छात्र सम्मेलन' के मंच से संगीत की मधुर ध्वनि आ रही थी —

..." रहें ना रहें हम,

महका करेंगे बनके कली, बनके सबा

बाग़-ए-वफ़ा में

गीत के शब्द जैसे उनके बीच कभी अधूरी रह गई भावनाओं को आवाज़ दे रहे थे।

"और पलाश...

शायद वही है —
जो सूनेपन से डरता नहीं,
जो पतझर के बाद भी स्वयं को खोया हुआ नहीं मानता।

जब वृक्ष अपने सारे पत्ते त्याग देता है,
तब वह शून्य नहीं होता —
वह अपने भीतर अग्नि को स्थान दे रहा होता है।

पलाश की तरह,
जीवन भी हमें पहले रिक्त करता है,
फिर उसी रिक्तता में रंग भर देता है —
इतने गहरे, इतने उज्ज्वल,
कि सूखा वन भी उत्सव बन उठे।

यह हमें सिखाता है —
कि खोना अंत नहीं,
बल्कि उस प्रकाश की तैयारी है
जो भीतर से जन्म लेता है।

और शायद...
सच्चा सौंदर्य वही है,
जो सबसे कठिन समय में भी
खिलने का साहस रखता है।"

* * *

The Oath of Hippocrates

I SWEAR by Apollo the physician, and Aesculapius, and Health, and All-heal, and all the gods and goddesses, that, according to my ability and judgment, I will keep this Oath and this stipulation — to reckon him who taught me this Art equally dear to me as my parents, to share my substance with him, and relieve his necessities if required; to look upon his offspring in the same footing as my own brothers, and to teach them this art, if they shall wish to learn it, without fee or stipulation; and that by precept, lecture, and every other mode of instruction, I will impart a knowledge of the Art to my own sons, and those of my teachers, and to disciples bound by a stipulation and oath according to the law of medicine, but to none others. ¶ I will follow that system of regimen which, according to my ability and judgment, I consider for the benefit of my patients, and abstain from whatever is deleterious and mischievous. I will give no deadly medicine to any one if asked, nor suggest any such counsel; and in like manner I will not give to a woman a pessary to produce abortion. With purity and with holiness I will pass my life and practise my Art. ¶ I will not cut persons labouring under the stone, but will leave this to be done by men who are practitioners of this work. Into whatever houses I enter, I will go into them for the benefit of the sick, and will abstain from every voluntary act of mischief and corruption; and, further, from the seduction of females or males, of freemen and slaves. ¶ Whatever, in connexion with my professional practice, or not in connexion with it, I see or hear, in the life of men, which ought not to be spoken of abroad, I will not divulge, as reckoning that all such should be kept secret. While I continue to keep this Oath unviolated, may it be granted to me to enjoy life and the practise of the art, respected by all men, in all times! But should I trespass and violate this Oath, may the reverse be my lot!

From The Genuine Works of Hippocrates translated from the Greek by Francis Adams, Surgeon, volume 2, London, 1849

The above oath attributed to Hippocrates [460-370 B.C.] is an early code of ethics establishing those high principles of conduct which have characterized the art of medicine. We can apply the teachings of this Greek physician to modern practice with but slight modifications. ¶ It is suggested that the student consult the monograph entitled The Doctor's Oath, by W. H. S. Jones, Cambridge University Press, 1924.